SARALA-PATRA
LAKHAN

K. P. SHUKLA

सरल-पत्र-लेखन

Sarala-Patra-Lekhan.
by

श्री केशवप्रसाद शुक्ल विशारद

K. P. Shukla.

हिन्दी भवन, लाहौर

सरल-पत्र-लेखन

पत्र-लेखन सिखाने के लिए आधुनिक ढंग की निराली पुस्तक

लेखक

श्री केशवप्रसाद शुक्ल विशारद
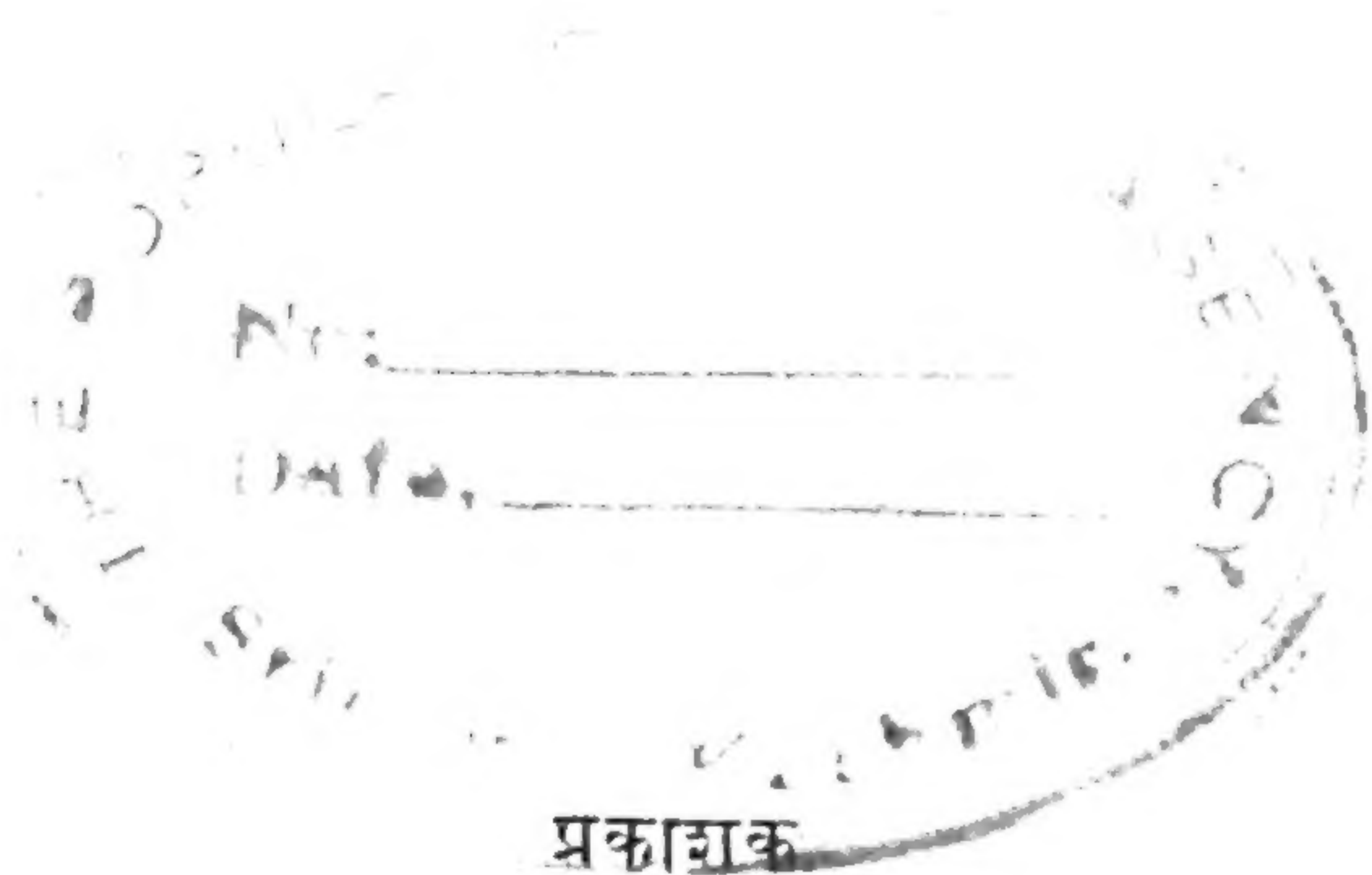
प्रकाशक

हिन्दी भवन

अनारकली, लाहौर

मूल्य ।)

प्रकाशक
श्री धर्मचन्द्र विशारद
हिन्दी-भवन
लाहौर

मुद्रक
श्री देवचन्द्र विशारद
हिन्दीभवन प्रेस
लाहौर

पत्र-लेखन-कला संबंधी साधारण बातें

मनुष्य अपने मनोभावों, अपनी आवश्यकताओं और दैनिक घटनाओं को वाणी द्वारा या लेख द्वारा प्रकट करता है। वाणी द्वारा अपने विचारों को वह बातचीत अथवा व्याख्यान के रूप में प्रकट करता है, ऐसे ही लेख द्वारा पत्र या निबंध के रूप में। बातचीत एक व्यक्ति या कुछ एक व्यक्तियों के साथ होती है। ऐसे ही पत्र एक व्यक्ति या कुछ व्यक्तिविशेषों के लिए होता है। उसे पढ़ने का अधिकार भी साधारणतया उसी व्यक्ति को होता है जिसे वह लिखा गया हो। अतएव जो भेद बातचीत में और व्याख्यान में है,वही भेद पत्र और निबंध में है। बातचीत में मनुष्य को अपने विचार इतने अधिक क्रमबद्ध नहीं करने पड़ते, उसमें भाषण-शक्ति की प्रौढ़ता का प्रदर्शन या लच्छेदार भाषा और कठिन शब्दों का प्रयोग उपयुक्त नहीं होता। इसी प्रकार पत्र में भी अपने विचारों को उतना क्रमबद्ध नहीं करना पड़ता जितना निबंध में। उसमें कठिन शब्दों के प्रयोग,लम्बे-लम्बे समासों और अलंकारों के बाहुल्य तथा भाषा के सौष्ठव पर अत्यधिक बल देने की आवश्यकता नहीं होती। इसके साथ ही हम देखते हैं कि जीवन में बहुत कम व्यक्तियों को व्याख्यान या उपदेश देने का अवसर प्राप्त होता है। परन्तु बातचीत तो मनुष्य मात्र ही करता है। सामाजिक प्राणी तो इसके बिना रह ही नहीं सकता। ऐसे ही निबंध बहुत कम आदमियों को लिखने पड़ते हैं। शिक्षणालयों से निकलने के बाद शिक्षित व्यक्तियों में से भी बहुत कम व्यक्ति कभी निबंध लिखते होंगे। परन्तु इस सभ्यता के विकास के साथ-साथ पत्र लिखना एक आवश्यकता होती जाती है। प्रत्येक

मनुष्य अपने दूरस्थित परिचित व्यक्ति का हाल जानना चाहता है, साथ ही आधुनिक जगत दूसरे देशों के व्यक्तियों से व्यापारिक संबंध जोड़ता रहता है। इन सबका सबसे सुगम और सस्ता साधन पत्र है। एक पत्र भेजकर और कुछ पैसे खर्च कर एक भारतीय व्यापारी इंग्लैंड और जापान से माल मँगा लेता है। उसे जन्म भर इंग्लैंड या जापान जाने की ज़रूरत भी नहीं पड़ती। अतएव यह कहना पड़ेगा कि आधुनिक सभ्यता के साथ-साथ पत्र लिखने की आवश्यकता और महत्ता बढ़ती जाती है।

साधारणतया पत्र लिखना बहुत आसान समझा जाता है, वास्तव में यह आसान भी बड़ा है यदि मनुष्य अपने पत्र-व्यवहार में कृत्रिमता और कठिनता न आने दे। परन्तु बहुत कम व्यक्ति अच्छा पत्र लिखना जानते हैं। क्योंकि वे प्रायः पत्र लिखते हुए ऐसे शब्दों और भावों का प्रयोग करते हैं, जिनका वे साधारण बातचीत में कभी न करते।

अच्छा पत्र वही है जिसमें बातचीत करने के उपयुक्त ढंग और रचना-शैली के नियमों का पालन हो। वाक्य ठीक और पूरे तथा व्याकरण और मुहावरे की दृष्टि से शुद्ध होने चाहियें। भाषा सरल, शब्द सुगम और तथा स्पष्ट होने चाहिये। पत्र की लेखन-शैली सादी होती हुई भी प्रभावोत्पादक होनी चाहिये।

पत्र में ही लेखक का व्यक्तित्व छिपा होता है। किसी का पत्र पढ़कर उसके बारे में प्रायः विचार बना लिए जाते हैं। जिस तरह अपरिचित व्यक्ति प्रथम संभाषण में ही बात करने वाले मनुष्य के बारे में अपने विचार बना लेता है, इसी तरह पत्र को देख कर भी प्रायः लिखने वाले के बारे में विचार बन जाया करते हैं। बातचीत में व्यक्ति की उपस्थिति, उसकी वेशभूषा तथा भावभंगी

भी संभाषण शक्ति के साथ सहयोग देती हैं, परन्तु पत्र में इन से सहायता नहीं मिलती। अतः पत्र लिखने में बातचीत से कुछ अधिक संयत होना पड़ता है, पत्र में पड़े हुए धब्बे तथा की गई काट-छाँट व्यक्ति की अस्थिर-चित्तता के द्योतक हैं। इसलिए पत्र लिखने से पहले कुछ थोड़ा सोच लेना चाहिये और क्रोध शोकादि को दूर कर स्थिर-चित्त होकर पत्र लिखना चाहिये।

पत्र लिखने में अनावश्यक शब्दों का अधिक प्रयोग न होना चाहिये। व्यर्थ एवं असंबद्ध प्रलाप से बचना चाहिये। जिसके पास पत्र भेजा जाय उसके गौरव और सम्मान का सर्वदा ध्यान रखना चाहिये। पत्र में अहंकार के भाव भी प्रदर्शित नहीं होने चाहिये, साथ ही अतिशयोक्ति और अत्युक्ति भी हानिकारक होती हैं। किसी व्यक्ति के प्रति उतना ही आदर-सम्मान अथवा प्रेम प्रदर्शित करना चाहिये जितना कि साधारण बातचीत में किया जाता है। जैसे बहुधा भाई को पत्र लिखते हुए लिख दिया जाता है—"कल मुझे पूज्य पिता जी का पत्र मिला जिसमें लिखा था कि प्रिय माता जी बहुत बीमार हैं।" इसमें पूज्य और प्रिय शब्दों का प्रयोग इतना उचित नहीं प्रतीत होता। हम साधारण बातचीत में इन का प्रयोग नहीं करते। साधारण बातचीत में हम यहीं कहेंगे कि कल मुझे पिता जी का पत्र मिला जिसमें लिखा था कि माता जी बहुत बीमार हैं।

व्यर्थ की बनावट तो सभी जगह वर्जित है, फिर भी अपरिचित व्यक्तियों के साथ पत्र-व्यवहार करने में यथा-स्थान शिष्टता के नाते इसका प्रयोग करना ही पड़ता है, विशेष परिचित व्यक्तियों के साथ इसका प्रयोग न करना चाहिये।

यदि पत्र में बहुत सी बातों का उल्लेख करना हो तो उनको भिन्न-भिन्न पैराग्राफ़ों में बाँट लेना चाहिये। यह ध्यान रखना चाहिए कि उस पैराग्राफ में वह विचार पूरी तरह से आ जाय तथा पहले और पिछले पैराग्राफ में कुछ संबंध स्थापित रहे।

यदि किसी पत्र का उत्तर देना हो तो उसे सामने रख कर पहले उसकी प्रत्येक बात का यथाक्रम उत्तर देना चाहिये। उत्तर देते समय बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिये जिससे अपनी हानि की भी संभावना न हो और जिसका पत्र आया है उसकी सब बातों का उत्तर भी दे दिया जाय। यदि किसी बात का उत्तर देना उचित न प्रतीत हो तो उसे इस तरह टाल देना चाहिये कि पूछने वाले को संदेह ही न हो।

पत्र इतना लंबा न होना चाहिये कि पढ़ने वाले का साहस ही टूट जाय। कई आदमियों को बीमारी होती है कि वे जब पत्र लिखने बैठते हैं, तो कई पन्ने भरे बिना साँस ही नहीं लेते। इससे पत्र की महत्ता ही मारी जाती है। सरलता और संक्षेप ही पत्र की जान है, पर इतना संक्षेप भी न होना चाहिये कि तार को भी मात कर जाय, और अर्थ ही समझ में न आवे।

पत्र में कभी कड़वी बात न लिखनी चाहिये, यदि लिखनी अत्यंत आवश्यक हो तो ऐसे ढंग से लिखनी चाहिये कि जहाँ तक हो उसका बुरा प्रभाव न पड़े।

बड़ों को पत्र लिखते समय, किसी गुप्त काम में अथवा किसी से रुपया लेना हो तो कार्ड का प्रयोग न करना चाहिए। ऐसे कामों में सदा बंद लिफाफे का प्रयोग करना चाहिए।

लेखन-प्रणाली

हिन्दी में पत्र लिखने की दो प्रणाली हैं, एक प्राचीन एक नवीन। पुराने पंडित और कुछ व्यापारी प्राचीन प्रणाली का प्रयोग करते हैं। इसमें लंबी-लंबी प्रशस्तियाँ दी जाती हैं। और किसने, कहाँ से, और किसको पत्र लिखा है यह सब पहले वाक्य में ही आ जाता है। यह प्रणाली आजकल बहुत कम होती जाती है। आजकल नई प्रणाली का ही अधिकतर प्रयोग होता है। नई प्रणाली बिलकुल पाश्चात्य ढंग की है। इसमें सबसे पहले दाहिने किनारे पर पता और तारीख होती है। उसके नीचे दूसरी लाइन में बाँयी ओर प्रशस्ति या संबोधन। उसके बाद अलग लाइन में साधारण पत्र प्रारंभ होता है। संबोधन के शब्द जहाँ समाप्त होते हैं ठीक उन के नीचे से पत्र की पहली पंक्ति प्रारंभ की जाती है और पत्र की पहली पंक्ति में जितना स्थान छुटा हो उतना ही स्थान छोड़कर प्रत्येक पैराग्राफ की पहली पंक्ति लिखी जाती है। बाकी पंक्तियाँ पत्र की पूरी चौड़ाई में लिखी जाती है। फिर सब से नीचे दाहिनी ओर भेजने वाले का विशेषण या परिचय तथा उसके हस्ताक्षर अलग अलग पंक्तियों में होते हैं।

हस्ताक्षर के नीचे प्रायः कुछ नहीं दिया जाता, पर यदि कोई बात पहले लिखने से छूट जाय और पत्र की समाप्ति के बाद याद आवे तो नीचे नवीन पंक्ति में "पुनश्च" लिखकर लिखी जा सकती हैं। मित्रों आदि के पत्रों में "पुनश्च" लिखकर फिर बात लिखने की चाल सी चल पड़ी है, पर व्यापारिक पत्रों में यह चाल अच्छी नहीं ?

पत्र-व्यवहार में पत्रों के बाहरी रंग-ढंग पर पूरा ध्यान देना चाहिये। अच्छा कागज़ वर्ता जाना चाहिये। सब ओर पर्याप्त खाली स्थान छोड़ना चाहिए। साधारण पत्र पृष्ठ के ठीक बीच में होना चाहिए। अपने हस्ताक्षर साफ तौर पर करने चाहिए। विशेषतः व्यापारिक पत्रों में इसका पर्याप्त ध्यान रखना चाहिए। जिससे कि अपरिचित व्यक्ति को नाम पढ़ने में कठिनता न हो। कई व्यक्ति बहुत ही जल्दी में हस्ताक्षर करना अपनी शान समझते हैं, पर यह उचित नहीं। मित्रों और बहुत ही परिचित व्यक्तियों के पत्रों में अपना नाम संक्षिप्त अक्षरों में भी लिखा जा सकता है।

पता लिखने के संबंध में

पत्रों पर पते ठीक और पूरे लिखे जाने चाहिए। लिफाफे या कार्ड पर पता लिखने का यह नियम है कि लिफाफे या कार्ड के दाहिनी तरफ नीचे की ओर पता लिखा जाता है। पहली पंक्ति में पत्र पाने वाले का पूरा नाम, दूसरी पंक्ति में पद व पेशे का उल्लेख या उसके स्थान का नाम, (घर का नंबर, गली का नाम या गाँव का नाम) तीसरी पंक्ति में डाकखाने का नाम और चौथी पंक्ति में ज़िले या प्रान्त का नाम देना चाहिये। विदेश में पत्र भेजना हो तो उस देश का नाम भी दे देना चाहिए।

पत्र पाने वाले का नाम लिखते समय उसकी सरकारी उपाधि आदि अवश्य देना चाहिये। लंबे चौड़े कल्पित विशेषण न देने चाहिये। इसके अतिरिक्त नाम के प्रारंभ में बड़ों के लिए श्रीयुत, श्रीयुक्त या श्रीमान् लगा देना चाहिये। बराबर वालों या छोटों को 'श्री' लगाना पर्याप्त है। कई बार 'श्री' या 'श्रीयुत' की

जगह प्रारम्भ में केवल पंडित, ठाकुर, बाबू या लाला आदि शब्द भी लगा दिये जाते हैं। नाम के अंत में बड़ों या बराबर वाले के लिए 'जी' भी लगा दिया जाता है। 'जी' हमेशा नाम के साथ ही रहता है। जाति आदि पीछे आती हैं—जैसे पं० उमादत्त जी शर्मा।

डाक्टर या प्रोफेसर आदि नाम के प्रारभ में लगते हैं, पर यदि कोई वकील है तो 'वकील' शब्द उसके नाम के अंत में दूसरी पंक्ति में लिखा जाता है। श्री पृथ्वीनाथ जी वकील।

स्त्रियों के नाम के प्रारंभ में श्रीमती या श्रीयुक्ता लगाया जाता है। छोटी के लिए 'श्री' भी लगा दी जाती है। अंगरेज़ी भाषा के अनुकरण करके अब कुमारी कन्याओं के नाम के आगे केवल 'कुमारी' ही लिख दिया जाता है—कुमारी सीता देवी मेहरा।

सरकारी या किसी संस्था के अधिकारियों अथवा व्यापारिक कम्पनियों आदि के मालिकों को जो पत्र भेजा जाता है उसमें व्यक्ति का नाम नहीं लिखा जाता। यदि नाम लिखा होगा तो वह वैयक्तिक पत्र समझा जावेगा। उनके पत्र और पते में केवल उनके पद का नाम रहता है। जैसे—हैडमास्टर डी. ए. वी. स्कूल, लाहौर। प्रचार मंत्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग।

उन व्यापारिक कम्पनियों के नाम के आगे जो किसी व्यक्ति के नाम से प्रारम्भ होती है लाला, सेठ या अंगरेज़ी की देखा देखी 'मैसर्स' शब्द भी प्रयुक्त होता है। परन्तु जिन कम्पनियों का नाम वैयक्तिक नाम से संबंध नहीं रखता उनके नाम के आगे कुछ नहीं जुड़ता जैसे—लाला रामलोक एण्ड ब्रदर्स, मेरठ। सेठ धनपतमल ज्वालादास कराची। हिन्दी भवन, अनारकली, लाहौर।

कारबारी चिट्ठियों में या रजिस्टर्ड पत्रों में भेजने वाले का नाम और पता बायीं ओर नीचे को अथवा ऊपर को दे दिया जाता है।

पता लिखने के कुछ नमूने आगे दिये जाते हैं।

टिकट

श्रीयुत रामदेव एम. ए.
अर्जुन निवास
राजा बाज़ार
नयी दिल्ली

टिकट

डाक्टर धनीराम मेहरा,
७८ हास्पिटल रोड
लाहौर

टिकट

प्रोफेसर श्रीनाथ अरोड़ा एम. ए.
जसवन्त कालिज,
जोधपुर, (राजपूताना)

टिकट

श्रीमती विद्याधरी जौहरी
लक्ष्मी बीमा कम्पनी
सिविल लाइन्स,
आगरा

टिकट

कुमारी राजेश्वरी कालिया
मार्फत श्रीयुत धर्मवीर एम.ए., एल-एल. बी., वकील,
रलाराम बिल्डिंग
जोधपुर

टिकट

हेडमास्टर
श्रीरामाश्रम हाईस्कूल
हाल बाज़ार,
अमृतसर

टिकट

रजिस्टर्ड लैटर,

सेठ (मैसर्स) धनपतमाल ज्वालासहाय

गांधी बाज़ार,

कराची

रामसरणदास
बी.ए.,एल-एल.बी.,
वकील, लाहौर

टिकट

हिन्दी भवन,

अनारकली,

लाहौर

पत्रों के प्रकार

पत्र कई प्रकार के होते हैं, साधारणतया हम उन्हें दो विभागों में बाँट सकते हैं, एक निजू या वैयक्तिक पत्र, दूसरे कारोबारी पत्र।

निजू पत्र वे हैं जो अपने मित्रों या संबंधियों को लिखे जाते हैं।

कारोबारी पत्र कई तरह के होते हैं—व्यापारिक, सरकारी अर्ध-सरकारी, प्रार्थनापत्र, कानूनी आदि।

पाश्चात्य लोग पत्रों का एक और विभाग करते हैं। वे निमंत्रण पत्रों को वैयक्तिक पत्रों से अलग रखते हैं, ये निमंत्रण-पत्र शुभ अवसरों पर भेजे जाते हैं और प्रायः छपे हुए होते हैं तथा कई एक व्यक्तियों को एक जैसे ही भेज दिये जाते हैं।

वैयक्तिक पत्र

संबंधियों और मित्रों के पारस्परिक पत्र वैयक्तिक या निजू पत्र कहाते हैं। इन पत्रों में बड़ों और छोटों की दृष्टि से प्रशस्ति या संबोधन में भेद पड़ता रहता है। प्राचीन प्रणाली का वर्णन तो यहाँ हम करते नहीं। नवीन प्रणाली की प्रशस्ति का ढंग आगे दिया जाता है।

बड़ों (पिता, दादा, मामा, चाची, बड़ा भाई, आचार्य या उनके समान अवस्था वालों) के लिए पूज्य, पूजनीय, पूज्यास्पद, पूज्यपाद, आदरणीय, मान्य, मान्यवर, श्रद्धेय, श्रद्धास्पद आदि प्रशस्तियाँ प्रयुक्त होती हैं। जैसे—पूज्य पिताजी, पूज्यपाद दादा जी, श्रद्धेय गुरु जी आदि।

बड़ी अवस्था की स्त्रियों (माता, दादी, बड़ी बहिन, मामी,

चाची, मासी आदि) के लिए भी यही प्रशस्तियाँ प्रयुक्त होती हैं, परन्तु कई बार उनका स्त्रीलिंग रूप दे दिया जाता है—जैसे पूज्या माताजी, पूजनीया माता जी,श्रद्धेय बहिन,मान्य मासी जी।

बराबर के भाई, मित्र, बहिन, भाभी आदि के लिए अधिकतर प्रिय, प्रियवर, प्यारे, स्नेहमयी इत्यादि प्रशस्तियाँ प्रयुक्त होती हैं प्रिय भाई, प्रियवर, प्रिय मित्र, प्रिय बहिन, स्नेहमयी भाभी।

छोटों या जहाँ अधिक स्नेह के कारण आदर का भाव कम हो गया हो वहाँ प्रशस्ति के बाद नाम ही और नाम का भी छोटा रूप या उपनाम प्रयुक्त होता है। जैसे—प्रिय देव, प्रिय कान्त (शकुन्तला) प्यारी गुल्लन।

स्त्रियाँ अपने पति के लिए प्रियतम, प्राणेश्वर, प्राणनाथ, हृदयवल्लभ, हृदयधन, इत्यादि आदर तथा प्रणयमिश्रित प्रशस्तियाँ प्रयुक्त करती हैं। पति स्त्रियों के लिए, प्रिये, प्रियतमे, प्राणप्रिये, हृदयवल्लभे इत्यादि प्रशस्ति प्रयुक्त करते हैं। बहुधा साथ ही नाम का छोटा रूप भी लिखते हैं। परन्तु ये प्रशस्तियाँ कोई निश्चित नहीं, प्रायः पत्र लिखने वाले ऐसी ही नयी नयी प्रशस्तियाँ घड़ते रहते हैं

थोड़े परिचित संभ्रान्त व्यक्तियों या दूर के संबंधियों के लिए प्रशस्ति के प्रयोग में अधिक प्रेम या आदर नहीं दिखाया जाता उपजाति,पेशा या पद के अनुसार उन्हें जिस संबोधन से पुकारा जाता है उसी के आगे 'प्रिय' या 'मान्य" लगा देते हैं। जैसे, प्रिय भल्लाजी, प्रिय प्रोफ़ेसर साहब, प्रिय वकील साहब, मान्य रायसाहब।

प्रशस्ति के अनंतर पत्र का वास्तविक कलेवर प्रारंभ होता है इस कलेवर में आत्मिकता, हास्य और संभाषण-शैली का अधिक प्रयोग पत्रों को अधिक रोचक बना देता है। पर हास्य सीमा के

भीतर चाहिये। पत्रों में अत्यधिक आदर भाव दिखाने के स्थान में यदि प्रेम का प्रदर्शन हो तो अधिक अच्छा होता है। परन्तु दूर के संबंधियों या थोड़े परिचित व्यक्तियों को पत्र लिखते समय सम्मान का पर्याप्त ध्यान रखना चाहिये। इन पत्रों में वर्णन, वाद-विवाद तथा आख्यान सब कुछ सम्मिलित हो सकता है। पत्र के कलेवर के अनंतर अंत में पत्र भेजने वाले का विशेषण या परिचय तथा हस्ताक्षर होते हैं। प्रशस्ति की तरह इसमें भी भेद पड़ता है।

बड़ों को लिखते समय नीचे 'आपका आज्ञाकारी'; 'आपका कृपा-पात्र'; आपका प्रिय पुत्र, आपका प्रिय शिष्य, आदि लिखे जाते हैं। बड़े भाई, बड़ी बहन या भाभी आदि को लिखते हुए अंत में 'स्नेह भाजन' 'स्नेह पात्र' आदि लिखा जाता है।

बराबर वालों को तुम्हारा प्रिय मित्र, तुम्हारी बहिन आदि प्रयुक्त किया जाता है।

छोटों को लिखते समय 'शुभचिन्तक', 'शुभेच्छु', 'हितकांक्षी' 'स्नेही' आदि विशेषण प्रयुक्त होते हैं।

कई बार केवल 'आपका' 'तुम्हारा' या भवदीय लिखकर ही हस्ताक्षर कर दिये जाते हैं।

निजू पत्रों में प्रायः कई लोग प्रशस्ति आदि सबके ऊपर इष्ट देवता का स्मरण भी कर लेते हैं, जैसे—'ओ३म्', 'श्रीगणेशाय नमः' आदि। प्रशस्ति के बाद और पत्र के प्रारम्भ करने से पूर्व बहुत व्यक्ति शिष्टाचार के लिए 'नमस्ते' 'चरण-बंदना', 'प्रणाम'; 'वन्दे' तथा प्रेम-प्रदर्शन के लिए 'स्नेहांजलि', 'चुम्बन' और आशीर्वाद के लिए 'चिरजीवी हो' 'सौभाग्यवती हो' आदि लिखते हैं, पर आजकल के शिक्षित व्यक्ति प्रायः इनका प्रयोग कम करते हैं।

१—पिता का पत्र पुत्र के नाम

(स्वास्थ्य का हाल लिखो)

अकाउंटेंट जनरल्स आफिस,
लाहौर
१-७-३६

* प्रिय पुत्र !

छुट्टी की कमी के कारण तुम्हें बीमारी की हालत में छोड़ कर मुझे आना पड़ा। विवश था, परन्तु मुझे तुम्हारी बड़ी चिंता लगी हुई है। जिस दिन तुम्हारा बुखार उतरता है उसी दिन तुम अपने हाथ से चिट्ठी लिखकर भेजना, तभी मुझे शान्ति मिलेगी। इसमें आलस्य न करना।

हाँ एक बात लिख दूँ, कि शरीर की इस नाजुक हालत में तुम पथ्य का पूरा ख़याल रखना। इस समय अपनी जीभ पर कड़ा नियंत्रण रखना। यदि तुमने इस समय कुछ अंटसंट खा लिया या ज़रा गरमी से घबरा कर बाहर सो गये तो बुखार फिर बिगड़ जायगा। इसलिए इसका ख़याल रखना और जिस तरह तुम्हारी माता जी कहें, उसी तरह करना।

सुषमा और कान्त को प्यार।

तुम्हारा शुभचिन्तक
गोपालदास

पुनश्चः—यदि तुम्हारी चिट्ठी न आई तो मैं शनिवार शाम की गाड़ी यहाँ से ज़रूर चल दूँगा।

---

* प्रायः बड़े आदमी 'प्रिय' या 'प्यारे' विशेषण के आगे नाम ही लिख देते हैं—जैसे प्रिय पुत्र के स्थान पर 'प्यारे राम' अधिक उपयुक्त होगा।

२—पुत्र का पत्र पिता को

(स्वास्थ्य का हाल)

चौड़ा बाजार
लुधियाना
३-७-३५

पूज्य पिताजी, प्रणाम।

पत्र आप का मिला। जब आप यहाँ से जा रहे थे तभी मैं आपको बहुत चिंतित देख रहा था, इसलिए मैंने सोचा था कि बुखार उतरते ही आपको पत्र लिखूँगा। इतने में कल आपका पत्र भी आगया। मेरा बुखार कल ही उतर गया था। कल पूरे दिन भर नार्मल रहा था। आज भी नार्मल है। आशा है कि अब बुखार न होगा।

आपके लिखने के अनुसार मैं पथ्य का बहुत ध्यान रखूँगा। डाक्टर साहब ने आज मूँग की दाल का पानी और फलों का रस देने को कहा है। वे कहते हैं कि यदि बुखार न हुआ तो परसों खिचड़ी देंगे।

कल माता जी को भी थोड़ी हरारत थी पर आज वे अच्छी हैं। अभी कमज़ोरी बहुत है। अतः लंबा पत्र नहीं लिख सकता। हो सके तो मेरे लिए कुछ अच्छे फल किसी आते जाते के हाथ भेज दीजिएगा।

सुषमा और कान्त प्रणाम कहती हैं।

आपका आज्ञाकारी
रामलाल

पुत्र की ओर से माता को
(छात्रावास का वर्णन करते हुए)

डी. ए.बी. स्कूल बोर्डिङ्गहाऊस
लाहौर
२-४-३५

पूज्य (श्रद्धेय) माता जी, प्रणाम

चलते समय आपको वचन देकर आया था कि लाहौर पहुँचकर ज्योंही मेरा बन्दोबस्त ठीक हो जाता है, त्योंही आपको पत्र लिखूँगा। चौथ शाम को यहाँ पहुँच गया था। उस रात मामा जी के यहाँ ही रहा। दूसरे दिन उनको साथ लेकर स्कूल गया। अतः स्कूल में दाखिल होने में कोई कठिनता न हुई। फिर उनके साथ ही छात्रावास देखने चला गया। छात्रवास की बहुत बड़ी बिल्डिंग थी। विद्यार्थियों के रहने का बड़ा अच्छा प्रबन्ध था। चारों तरफ कमरों की पंक्ति सी चली गई थी। बीच में बाग था। मैंने यही निश्चय किया कि यहीं रहूँगा। मामा जी ने बहुत ज़ोर दिया कि मैं उनके घर ही रहूँ। पर एक तो उनका घर बहुत दूर था रोज़ाना आने-जाने में खासकर आजकल की गरमी के दिनों में बहुत अधिक कठिनता होती, दूसरा घर भी छोटा था। और मामी जी की तबीयत भी ठीक नहीं रहती, इसलिए मैं उनके यहाँ न ठहरा। शाम को ही सामान उठाकर छात्रावास में चला आया।

छात्रावास में कुल १५० लड़के के लगभग है। जिस कमरे में मैं रहता हूँ, उसमें पाँच और हैं। उनसे मैंने खूब परिचय कर लिया है। यहाँ सब भाई भाई की तरह ही रहते हैं। हमारे आश्रम में निरीक्षक एक वृद्ध सज्जन हैं। वे सब लड़कों को पुत्र की तरह प्यार

करते हैं और नये आये हुए लड़कों का तो बहुत ही ध्यान रखते हैं। हम सबको सबेरे पाँच बजे उठना पड़ता है और साढ़े छः तक दैनिक कामों से निवृत्त हो स्कूल पहुँचना होता है। वहाँ से लगभग १२ बजे छुट्टी होती है। फिर हम सब आकर खाना खाते हैं। उसके बाद घंटा डेढ़ घंटा आराम करते हैं,फिर सब अपनी अपनी पढ़ाई के लिए बैठ जाते हैं। मेरी पढ़ाई तो अभी शुरू नहीं हुई। कल या परसों से शुरू करूँगा। शाम को कुछ विद्यार्थी खेलने के लिए ग्राउंड में चले जाते हैं। कुछ तालाब में तैरते है। रात को आठ बजे सब संध्या के लिए इकट्ठे होते हैं। उसके बाद फिर खाना खाकर कुछ देर घूमने के लिए चले जाते हैं। रात साढ़े ९ बजे सबकी हाज़िरी होती है, उसके बाद हम सो जाते हैं।

पहले दिन ज़रा मेरा दिल उदास हुआ था, पर अब तो दिल खूब लग गया है। छुट्टियाँ अगस्त में होंगी तब ही घर आऊँगा।

पिता जी को प्रणाम। कान्ता और गोपाल को प्यार।

आपका प्रिय पुत्र

सुदर्शन

४—भाँजे की ओर से मामा को

(नवजीवन और भावी शिक्षा के विषय में)

जंडियाला गुरु

१०-४-३५

पूज्य मामा जी,

आपको यह सुनकर प्रसन्नता होगी कि मैं मैट्रिकुलेशन परीक्षा में फर्स्ट डिविज़न में पास हुआ हूँ। अमृतसर के ज़िले भर में मैं ही सर्व प्रथम आया हूँ।

इस समय मेरे सामने यह बड़ा भारी प्रश्न है कि मैं अब आगे क्या करूँ ? आप जानते हैं कि घर में यह सलाह मैं आप से ही ले सकता हूँ। पिता जी तो कहते हैं—"जैसे तेरे मामा जी कहें—वही कर, मैं तो भाई पढ़ा-लिखा नहीं"। अतः आशा करता हूँ कि आप वापिसी डाक से अपनी निश्चित सम्मति लिख भेजने की कृपा करेंगे।

आपको पता ही है कि मैंने मैट्रिकुलेशन में संस्कृत और साइन्स ली थी। हैडमास्टर साहब तो कहते हैं कि एफ़. एस. सी. में दाखिल हो जाऊँ, और फिर डाक्टरी पढ़ूँ, या एफ़. ए. पास कर के बी.कॉम. में दाखिल होऊँ। पर मैं सोचता हूँ कि दोनों में ५-६ साल लग जायँगे, इतने देर तक पढ़ाई के लिए क्या प्रबंध करूँगा। पिता जी की आर्थिक हालत आपसे छिपी नहीं, इतने पर भी पिता जी मेरी शादी के लिए ज़ोर डाल रहे हैं। यह तो मेरा दृढ़ निश्चय है कि जब तक मैं अच्छा कमाने लायक नहीं हो जाता, तब तक मैं शादी न करूँगा। यदि इस बात पर मुझे पिता जी की आज्ञा की अवज्ञा भी करनी पड़ी तो मैं बड़े खेद से करूँगा। परन्तु अब प्रश्न यह है कि आगे पढ़ाई का क्या प्रबंध करूँ।

वैसे तो मुझे १५) वज़ीफ़े के मिल जायँगे, ऐसी आशा है, और अगर मैं लाहौर में रहा तो इन दो साल तक मैं ट्यूशन करके भी कुछ कमा लूँगा। पर प्रश्न आगे का है, जिसको अभी से सोचकर चलना चाहिये।

आपके पत्र की प्रतीक्षा में हूँ, जैसा आप लिखेंगे, वैसा ही करूँगा। माता जी आपको नमस्ते, और बच्चों को प्यार देने को कहती हैं।

आपका स्नेहपात्र
श्यामस्वरूप

५—मामा का पत्र भाँजे के नाम

(उत्तर)

अजमेरी गेट
दिल्ली
१५-४-३५

प्यारे श्याम,

तुम्हारा पत्र मिला। पढ़ कर बहुत प्रसन्नता हुई, तुम सचमुच अपने कुल को उज्ज्वल करोगे।

तुमने मुझ से अपने भावी जीवन के बारे में राय पूछी है, सो मेरी तो यह राय है कि तुम एफ.ए. पास कर बी. कॉम. पास करो। वैसे डाक्टर बनने से तुम अधिक स्वतंत्र रह सकते हो, पर उसके लिए एक तो छः साल पढ़ाई में लगेंगे, दूसरा उसकी पढ़ाई इतनी अधिक होती है कि तुम प्राइवेट ट्यूशन न कर सकोगे। घर की ऐसी आर्थिक स्थिति में तुम बिना ट्यूशन के कहाँ तक गुजारा कर सकोगे, इसको तुम स्वयं सोच सकते हो? इसके अलावा आजकल डाक्टरों की भी अच्छी प्रैक्टिस नहीं रही। जनता उसी डाक्टर पर श्रद्धा करती है, जो या तो बूढ़ा हो या विलायत से कोई बहुत बड़ी डिग्री लाया हो। सो विलायत जाने के लिए तुम्हारे पास धन कहाँ?

बी. कॉम. पास कर लोगे तो मैं तुम्हें अपने दफ्तर में अच्छी नौकरी भी दिला सकूँगा, या तुम स्वतंत्र हिसाब जाँच-पड़ताल करने का काम कर सकते हो, इसके साथ ही यदि तुम वकील बनना चाहोगे तब भी तुम्हें कोई रुकावट न होगी। इसलिए मेरी यही राय है, आगे तुम सोच लो।

हाँ, मैं तुम्हारे पिता जी को लिख रहा हूँ, कि जब तक तुम कमाने नहीं लगते तब तक तुम्हें विवाह करने के लिए विवश न करें। आशा है अब वे तुम पर ज़ोर न डालेंगे।

घर में सब को नमस्ते। बच्चों को प्यार।

तुम्हारा शुभचिंतक
धनपतराय

६—छोटे भाई की ओर से बड़े भाई को

(रुपया मँगाने के लिए)

रामजस हाई स्कूल
दरियागंज,
दिल्ली
५-७-३५

पूज्य भाइ साहब,

नमस्ते। इन दिनों हमारी त्रैमासिक परीक्षा हो रही थी, इसलिए आपको पहले पत्र न लिख सका। क्षमा करें।

२७ जुलाई [illegible]ारे स्कूल बंद हो रहे हैं। स्कूल वाले छुट्टियों की फीस भी [illegible]हीने एक साथ ही लेंगे। इधर छुट्टी जाने से पहले यहाँ के हिसाब साफ करने के लिए और फिर घर पहुँचने के लिए भी कुछ रुपयों की ज़रूरत होगी। यहाँ से चलते समय मैं कुछ नयी किताबें भी खरीदना चाहता हूँ, जिनका छुट्टियों में अध्ययन कर सकूँ। अतएव २०) बहुत शीघ्र भेज दीजिए।

यहाँ सब कुशल है। यहाँ से कुछ मँगाना हो तो लिखें। भाभी जी को नमस्ते।

आपका स्नेहपात्र
अर्जुनदेव

७—बड़े भाई की ओर से छोटे भाई को
(उत्तर)

पो. आ. मुलाना
(ज़िला अम्बाला)
१०-७-३५

प्यारे अर्जुन,

बहुत दिन बाद तुम्हारा पत्र मिला। महीने भर तुम्हें पत्र लिखने का ख़याल ही नहीं रहता। जब तुम्हें रुपयों की ज़रूरत पड़ती है, तब ही तुम पत्र लिखते हो अन्यथा नहीं। पता नहीं तुम्हें कितनी बार समझाया है कि तुम हर हफ़्ते एक पत्र ज़रूर भेजा करो। पर तुम्हें इसकी परवाह नहीं।

१५) तुम्हारे पते पर आज मनिआर्डर से भेज रहा हूँ। ज़रा ख़र्च का कुछ ख़याल रखा करो। अभी पंद्रह दिन हुए तुम्हें २०) भेजे थे। वे सब क्या हुए? यहाँ आते हुए सारा हिसाब साथ लेते आना। मैं अभी एक शादी पर लाहौर गया था, आते समय वहाँ से सब चीज़ें ले आया हूँ, अतः अब कुछ ज़रूरत नहीं।

[illegible]हारा हितकांक्षी
[illegible]नीलाल

पुनश्चः—पत्र बंद करते समय हैडमास्टर साहब का भेजा हुआ तुम्हारा परीक्षा-फल मिला। तुम तीन विषयों में फेल हो। पता नहीं लगता कि तुम क्या करते रहते हो? मैंने तुम्हें दिल्ली इसीलिए दाख़िल कराया था कि यहाँ गाँव में अच्छी पढ़ाई नहीं होती, पर तुम वहाँ पहुँच कर बिलकुल बेपरवाह हो गए हो। शायद किसी बुरी संगत में पड़ गये हो। यदि यही हाल रहा तो मुझे तुम्हें दिल्ली से वापिस बुला लेना पड़ेगा। इतने ख़र्च के बाद भी अगर वही फल हो, तो दिल्ली जाकर पढ़ने का क्या फ़ायदा!

८—छोटे भाई की ओर से बड़े भाई को

(यात्रा और दृश्य का वर्णन)

मार्फत श्री मुन्शीराम जी वकील
जालोरीगेट
जोधपुर
३-६-३६

पूज्य भाई साहब !

परसों रात आप से बिदा हो ९ बजे की गाड़ी पकड़ी जो भटिंडा लगभग रात १ बजे पहुँची थी, उसी समय बीकानेर की गाड़ी तैयार खड़ी थी। गाड़ी बदल कर बहन जी और मैं दोनों ही सो गये। चार बजे के करीब गाड़ी यहाँ से चली और साढ़े सात बजे हनुमानगढ़ पहुँची। मेरी तो नींद ही न खुलती थी, बहन जी ने मुझे उठा दिया, और हाथ मुँह धो कर कुछ खा लेने को कहा। मैं बड़ी मुश्किल से उठा और बहनजी के कहने से मेने थोड़ा बहुत खा पी लिया। गाड़ी यहाँ काफी देर ठहरी थी। कोई आठ बजे गाड़ी फिर चली। यहाँ से आगे रेतीला मैदान शुरू हो गया। चारों तरफ रेत ही रेत थी। स्टेशनों पर भी पानी का कहीं नाम न था। गाड़ी के साथ ही पानी का एक डिब्बा लगा था। जब स्टेशन पर गाड़ी पहुँचती थी, तो वहाँ दूर दूर से आई हुई औरतों की पानी भरने के लिए भीड़ लग जाती थी। शाम ६ बजे बीकानेर स्टेशन आया। तब तक यही हाल रहा। बीकानेर स्टेशन पर गाड़ी दो घंटा खड़ी रही। दिन भर में हनुमानगढ़ के बाद यहीं खाने को मिला। ८ बजे

के करीब फिर गाड़ी चली और सबेरे ६ बजे जोधपुर पहुँची। तब जाकर दिल में दिल आया।

आज का दिन जोधपुर में खूब आराम से कट गया। दोपहर जीजा जी के साथ शतरंज खेल कर बिता दी। शाम को जीजा और मैं बालसमंद देखने चल दिये। मुन्नी की तबियत कुछ खराब हो गई थी, इसलिए बहन जी ने साथ न दिया। कोई आध घंटे में हमारा तांगा बालसमंद पहुँच गया। रास्ते में जहाँ इधर-उधर बिलकुल उजाड़ था, वहाँ इस मरुभूमि में पोलो के लंबे चौड़े हरे मैदान को देख कर दिल हरा हो जाता था। घास इस तरह सम-तल थी मानों हरी मखमल बिछाई गई हो। सुना है यहाँ के महाराज को पोलो का बहुत शौक है।

बालसमंद के फाटक में घुसते ही एक बड़ा सा बाग़ नज़र आया। रंग-बिरंगे फूल, हरे मैदान और कई ऊँचे वृक्ष इसकी शोभा को बढ़ाते हैं। कुछ आगे बढ़ने पर तीन ओर से छोटी-छोटी पहाड़ी से घिरी हुई एक बहुत बड़ी झील है। जिसे बालसमंद या बालसमुद्र कहते हैं। इसी झील पर चौथी ओर जोधपुर महाराज का महल है। गरमियों में महाराज यहाँ आकर दिन बिताते हैं। महल की तरफ सीढ़ियाँ बनी हुई है, उनके द्वारा झील तक पहुँचा जाता है। झील के बीच में दो तीन छोटी छोटी सुन्दर नौकाएँ राज-परिवार के जल-विहार के लिए पड़ी रहती हैं।

तीन ओर से नंगी काली पहाड़ी चट्टानों के बीच में हिलोरें लेते हुए हरे हरे जल पर जब शाम के डूबते हुए सूर्य की किरणें झिलमिल झिलमिल करती हैं तब इंद्रधनुष का-सा रंगों का अद्भुत सम्मिश्रण होता है। मैंने तो ऐसा अनूठा दृश्य अब तक कभी

न देखा था, । जीजा जी कहते थे कि उदयपुर को छोड़कर ऐसा दिव्य दृश्य शायद ही और कहीं देखने को मिलेगा। बहुत इच्छा थी कि उस स्वच्छ जल में स्नान करें, पर पता नहीं था, कि वहाँ नहाने और तैरने की इज़ाज़त है या नहीं अतः अपने मन के वेग को भीतर ही भीतर दबाना पड़ा।

बालसमंद के बाहर बाग में ही एक ओर चिड़ियाघर भी है । जिसने लाहौर का चिड़ियाघर देखा हो उसके लिए यहाँ कोई नवीन वस्तु नहीं थी फिर भी जानवरों को कुछ देर झाँककर वहाँ से विदा हुए। देर बहुत हो गई थी, अतः मंडोर देखने न गये। कल सबेरे वहाँ की बारी है और फिर किला आदि अन्य दर्शनीय स्थान देखूँगा।

जीजा जी कहते हैं तुम्हें आजकल छुट्टियाँ हैं, अतः पूरे हफ़्ता भर यहाँ रहने पड़ेगा, पर मेरी इच्छा परसों या चौथ यहाँ से चल देने की है। यहाँ से अजमेर जाऊँगा, और फिर जयपुर अलवर तथा दिल्ली ठहरता हुआ १६ या १७ को लाहौर पहुँच जाऊँगा।

माता जी और भाभी को प्रणाम। मुन्नी को प्यार।

आपका स्नेहभाजन
शशि

पुनश्चः—मुन्नी के लिए खिलौने तो मैं जयपुर से लेता आऊँगा पर घर और भाभी के लिए कोई चीज़ मँगानी हो तो लाला गोपाललालजी के पते पर दिल्ली पत्र लिख दीजिएगा। मैं उनको साथ लेकर वे चीजें बाज़ार से खरीद लाऊँगा।

१—पिता की ओर से पुत्री को

(पढ़ाई और स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ)

७८ हालबाज़ार अमृतसर
२५-६-३५

प्यारी शकुन्तला,

तुम्हारी परीक्षा समाप्त हुए बहुत दिन हो गए, अब तो परिणाम भी निकलने वाला होगा फिर अब तुम पत्र भेजने में इतनी देर क्यों करती हो। तुम्हें पता है कि जब तुम्हारा पत्र नहीं आता है, या देर से आता है तब तुम्हारी माता कितनी चिन्ता करने लगती हैं। फिर भी तुम यह लापरवाही करती हो! हफ़्ते में से कोई चार-पाँच मिनिट निकाल कर ही अपने स्वास्थ्य का हाल लिखती रहा करो।

परीक्षा के दिनों में तुमने बहुत परिश्रम किया होगा। आशा करता हूँ, तुम अच्छे नंबरों में पास भी होगी। परन्तु तुम्हें साथ ही यह भी कहना चाहता हूँ, कि तुम अपने शरीर का भी ख़याल रक्खा करो। आजकल के लड़के और लड़कियाँ अपने शरीर का ख़याल नहीं रखते। यही कारण है कि वह जीवन में कोई भी काम नहीं कर सकते। तुम्हारी माता पचास से ऊपर की हैं, वे जितना काम कर लेती हैं, उतना तुम्हारी नौजवान भाभी नहीं कर सकती। इसलिए तुम्हें शारीरिक उन्नति की ओर सबसे अधिक ध्यान देना चाहिए। शरीर स्वस्थ न हुआ, तो पढ़ाई आदि सब व्यर्थ हैं। रोज़ सवेरे घूमने जाया करो। शाम को भी कुछ कसरत किया करो या रस्सी कूदा करो।

अपना हाल वापिसी डाक से लिखो। तुम्हारी माता तुम्हें आशीर्वाद देती है।

तुम्हारा शुभचिंतक

१०—लड़की की ओर से पिता को

(परीक्षा में पास होने की सूचना)

कन्या महाविद्यालय
जालंधर
४-८-३५

पूज्य पिता जी, प्रणाम।

आपका पत्र परसों मिला था। परीक्षा के बाद मैं कई दिन तक बीमार पड़ी रही,इसलिए पत्र न लिख सकी। अब बिलकुल स्वस्थ हूँ। आपको यह सुनकर हर्ष होगा कि मैं इस बार हिन्दीभूषण परीक्षा में पास होगई हूँ। कल ही उस का परिणाम निकला है। अब मुझे बुनाई की वह किताब भेज दीजिए जो आपने इनाम में देने को कही थी, जो लाहौर में हिन्दीभवन में देखी थी।

हाँ, एक बात में मैं आपकी सलाह लेना आवश्यक समझती हूँ। हमारे पंडित जी कहते हैं कि आगे मैं हिन्दी-प्रभाकर परीक्षा की तैयारी करूँ, और साथ ही केवल अंग्रेज़ी में मैट्रिक परीक्षा दूँ। यदि आगे फिर वक्त मिले तो एफ. ए. और बी. ए. केवल अंग्रेज़ी में दे दूँ। वे कहते हैं कि इससे मुझे साहित्य का ज्ञान हो जायगा। लड़कियों ने नौकरी तो करनी नहीं अतः उन के लिए हिसाब वगैरह में सिर लड़ाना व्यर्थ वक्त खराब करना है। पर बाई जी कहती हैं कि मैं सब विषय लेकर मैट्रिक परीक्षा दूँ। अगर केवल अंग्रेज़ी में दूँगी तो कालिज में दाख़िल न हो सकूँगी। मुझे भी बाई जी की राय अच्छी लगती है। आपकी क्या सम्मति है, जैसा आप लिखेंगे, वैसा ही करूँगी।

भाई साहब को नमस्ते, गोपाल को प्यार

आपकी आज्ञाकारिणी
सावित्री

११—लड़की की ओर से माता को

संयोगितागंज
इंदौर
२३-४-३५

पूज्य माता जी प्रणाम।

कल अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के अवसर पर भाई साहब यहाँ बिना सूचना दिए ही पहुँच गये। मैं उस समय सम्मेलन के पंडाल की ओर जाने को तैयार थी, एकदम उनको देखकर चकित होगयी। उनसे पता लगा कि आपकी तबीयत आजकल अच्छी नहीं रहती। क्या कारण है, आप तो मुझे पता भी नहीं देतीं। महीनों बीत जाते हैं, पर आपके पत्र के कभी दर्शन नहीं होते। भाभी के हाथ से ही कभी दो चार पंक्ति लिखा दिया कीजिये।

आजकल तो यहाँ बड़ी रौनक है। महात्मा जी सम्मेलन के प्रधान हैं,उनके साथ मीराबहिन तथा अन्य कई नेता आये हुए हैं। महाराज भी आज सम्मेलन में पधारेंगे। गोविंद अपने पिता जी के साथ सम्मेलन में पधारे हुए प्रतिनिधियों के कैंप की ओर चला गया है। मैं और मुन्नी अब जाने को तैयार हैं।

भाभी को नमस्ते, अपने स्वास्थ्य का हाल लिखियेगा।

शेष फिर—

आपकी प्यारी पुत्री
स्नेहलता

पुनश्च—यदि आपको दिल्ली वाली कमला का, जो हमारे पड़ोस में ही रहती थी, पता मालूम हो तो लिखना।

१२—भाभी की ओर से बराबर की ननद को

(पहले पत्र का उत्तर)

बुढ़ाना गेट
मेरठ
२३-४-३५

प्रिय बहिन, नमस्ते।

माता जी के नाम तुम्हारा पत्र आया। माता जी ने तो मुझे कई वार तुम्हें चिट्ठी लिखने को कहा था, पर उनकी बीमारी के कारण घर में काम अधिक होने से इतने दिन पत्र न लिख सकी। क्षमा करना।

माता जी को कोई खास बीमारी नहीं पर बुढ़ापे के कारण ही उनकी तबीयत ठीक नहीं रहती। सर्दियों में उनके जोड़ों में दर्द शुरु हो गई थी, पर अब तो मौसम बदलने के साथ-साथ कम होती जाती है।

तुम्हारे भाई साहब तो शायद पत्र मिलने तक वहीं होंगे। यदि तुमको छुट्टी मिल सके तो कुछ दिन के लिए उनके साथ चली आओ। अब तो तुमको गये दो साल हो गये हैं।

अपने भाई साहब से कहना कि रास्ते में जयपुर से मेरे लिए एक दो बढ़िया साड़ी और कुछ पीतल के बरतन तथा खिलौने लेते आवें।

ननदोई साहब को नमस्ते। गोविंद और मुन्नी को प्यार।

स्नेहसहित
कौशल्या

१३—कुमारी कन्या की ओर से पिता के मित्र को

मार्फत पं० रामचन्द्र जी मिश्र
खेजड़े का रास्ता
चाँद पोल, जयपुर
१-५-३५

मान्य भाई साहब,❀

आपसे यद्यपि मेरा कभी साक्षात्कार नहीं हुआ, तथापि आप से मैं सर्वथा अपरिचित न हूँगी, ऐसी आशा है, क्योंकि आप मेरे पिताजी से भली-भाँति परिचित हैं। उन के बीमार होने के कारण आज पहली बार मैं आप को कष्ट देने लगी हूँ, आशा है आप इसके लिए क्षमा करेंगे।

आपको पता ही है कि पिताजी कई दिन से बीमार हैं। अब उनकी तबीयत पहले से तो अच्छी है, बुखार भी उतर गया है, पर कमज़ोरी बहुत है। डाक्टरों ने उन्हें किसी पहाड़ पर ले जाने की सलाह दी है। हमारी सलाह उन्हें अल्मोड़ा या काश्मीर ले जाने की है। क्या आप वापिसी डाक से यह सूचित करने का कष्ट करेंगे कि लाहौर से काश्मीर जाने के लिए कौन सा रास्ता अच्छा रहेगा, कितना खर्च आवेगा, काश्मीर में रहने की क्या व्यवस्था है, और काश्मीर में आजकल कैसी मौसम है?

❀ पाश्चात्य तरीके से तो ऐसे स्थान में संबोधन में 'प्रिय महोदय' ही लिखना चाहिए। परन्तु भाषा में आदर के लिए बड़ों को 'मान्य महोदय' लिखा जाता है, पर यदि पिता का परिचित व्यक्ति पत्र लिखने वाले से थोड़ा ही बड़ा हो तो "भाई साहब" और पिता की उमर का हो तो 'चाचाजी' लिखने से अपनत्व स्थापित हो जाता है। अतः यही संबोधन अधिक उपयुक्त है।

आपका पत्र आने पर हम अपना प्रोग्राम बनायँगे। कष्ट के लिए क्षमा, धन्यवाद पेशगी।

आपकी बहन
†(कु०) इंदुबाला

१४—भतीजी की ओर से चाचा को

खेंजड़े का रास्ता
चाँदपोल
जयपुर
३-३-३५

पूज्य चाचा जी,

आप जब से यहाँ से गये है, तब से आपका कोई पत्र नही आया। पिताजी की तबीयत अब पहले से अच्छी है। बुखार उतर गया है, पर अभी कमजोरी बहुत है। डाक्टरों ने सलाह दी है कि वे गरमी के दिन किसी पहाड़ पर बिताएँ। इसलिए हमने जल्दी ही किसी पहाड़ पर जाने का निश्चिय किया है। कहाँ जायँगे इसका अभी निश्चय नहीं हुआ। अल्मोड़ा या काश्मीर जाने की सलाह है। दिल्ली में मामा जी से राय पूछी है। साथ ही हिन्दी भवन लाहौर के संचालक से जो कि पिता जी के मित्र हैं, काश्मीर के बारे में पूछताछ कर रहे हैं। ज्योंही उन दोनों का पत्र आता है, हम पहाड़ के लिए रवाना हो जायँगे।

---

† पाश्चात्य तरीके का अनुकरण कर बहुधा शिक्षित कुमारी लड़कियाँ अपने हस्ताक्षर से पहले कोष्ठ में 'कु०' लिख देती हैं, जिस से पत्र पाने वाले को पता लग जाता है कि लिखने वाली अविवाहिता है और उत्तर देते समय वह संबोधन आदि का ध्यान रखता है।

पीछे नौकर यहाँ रहेगा। पिता जी कहते हैं कि १०-१२ दिन में एक बार आकर घर की देख-रेख करते रहियेगा।

चाची जी को प्रणाम, शशि और मुन्नी को प्यार।

आपकी बेटी
इन्दुबाला

पुनश्चः—मनोरमा बहिन को भी अब छुट्टी हो गई होगी। उनसे कहिये कि वे जयपुर ७ तारीख तक पहुँच जायँ। ये छुट्टियाँ हमारे साथ ही पहाड़ पर बितावें। उनके आने से हमें बहुत सहायता मिल जावेगी।

———

१५—मित्र की ओर से अपने मित्र की कन्या को

(उत्तर)

हिन्दी भवन
लाहौर ५-३-३५

प्रिय इंदु बहन,

तुम्हारा पत्र मिला। अपरिचित होते हुए भी मैं तुम से खूब परिचित हूँ। तुम्हारे पिता जी कई बार तुम्हारा ज़िक्र करते रहे हैं।

यह पढ़कर प्रसन्नता हुई कि तुम्हारे पिता जी अब स्वस्थ हो रहे हैं, विशेषत: वे काश्मीर आने की सोच रहे हैं। बहुत दिन बाद उनके दर्शन तो हो सकेंगे। मैं यदि तुम्हारी कोई मदद कर सकूँगा, तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी।

लाहौर से काश्मीर जाने का आजकल बहुत सस्ता और अच्छा इंतिज़ाम है। यहाँ से काश्मीर सीधी लॉरी या मोटर जाती हैं। लॉरी में आने जाने का दो महीने के लिए वापिसी टिकट फर्स्ट क्लास का कुल १३) में मिल जाता है। लॉरी रास्ते में एक

दिन जम्मू ठहर कर दूसरे दिन श्रीनगर पहुँच जाती है। पूरी कार यदि चाहें तो ७५) में मिल जावेगी। कार सवेरे यहाँ से चल कर शाम को ही श्रीनगर पहुँचा देगी।

काश्मीर में मौसम आजकल बहुत अच्छा है। फल तो अभी बहुत न होंगे। केवल चेरी ही मिलेगी, पर मौसम अच्छा है। वहाँ एक दो दिन श्रीनगर में आर्य-समाज में ठहरा जा सकता है, फिर पहलगाँव में होटल का प्रबंध हो सकता है। तम्बू भी मिल जाते हैं। नहीं तो हाउसबोट का प्रबंध हो सकता है।

काश्मीर और पहाड़ों से सस्ता तथा अच्छा रहेगा। दृश्य भी अच्छे हैं। काश्मीर ही आने का निश्चय करो, मेरा आग्रह है।

आने से पहले सूचना दे देना, यहाँ सब व्यवस्था हो जावेगी। अपने पिता जी से नमस्ते कहना।

स्नेही*
देवचन्द्र

१६—भाँजी को ओर से मामा को

(अपनी पहुँच की सूचना)

खेजड़े का रास्ता
चांदपोल, जयपुर
१०-३-३५

पूज्य मामा जी, प्रणाम।

हिन्दी भवन लाहौर के संचालक महोदय का, जिनके बारे में आपको पहले लिख चुकी हूँ, कल पत्र आया है। और उनके लिखने के अनुसार हमने काश्मीर जाने का निश्चय

*'स्नेही' और 'प्रेमी' में फर्क है—स्नेह शब्द भाई-बहन के प्रेम के लिए प्रयुक्त होता है, अतः इसका प्रयोग ऐसे स्थानों पर किया जा सकता है।

किया है। हम कल सुबह 'अहमदाबाद दिल्ली एक्सप्रेस' द्वारा दिल्ली पहुँच रहे हैं। वह गाड़ी सवेरे ८-४० पर पहुँचती है। दिन भर वहाँ आराम कर रात फ्रंटियर मेल से लाहौर रवाना हो जायेंगे।

आशा है आप स्टेशन पर दर्शन देंगे। हो सके, तो पिता जी के लिए किसी मोटर या बंदगाड़ी का प्रबंध कर रक्खें, क्योंकि अभी वे बहुत कमज़ोर हैं। शेष मिलने पर—

स्नेह भाजन
इंदु

१७—छोटे भाई की ओर से बड़ी बहन को

(बुलाने के लिए)

बंगाली मुहल्ला
लाहौर
२६-६-३५

पूज्य बहन जी, नमस्ते।

बहुत दिन से आपका कोई समाचार नहीं मिला। क्या काम में इतना लगी रहती हैं ? घर में आप तीन तो कुल आदमी हैं, फिर पता नहीं आपको फ़ुर्सत क्यों नहीं मिलती !

हमारी छुट्टियाँ ५ जुलाई से हो रही हैं, पिता जी ने भी उस दिन से दो महीने की छुट्टी ले ली हैं। हमारी सलाह इस बार डलहौजी जाने की है। वहाँ एक कोठी का प्रबंध भी कर लिया है। हम सब की यही इच्छा है कि आप भी हमारे साथ रहें और जीजा जी भी। यदि जीजा जी को छुट्टी न मिल सके तो आप तो अवश्य चलें। आपको यहाँ से गये भी साल से ऊपर हो गया

है, इसलिए अब तो आपको 'न' करने का अवसर न दूँगा। लिखेंगी, तो मैं खुद लेने आ जाऊँगा।

जीजा जी को नमस्ते, मुन्नी को प्यार। पत्रोत्तर शीघ्र दें।

स्नेहपात्र
राम स्वरूप

१८—बड़ी बहन की ओर से छोटे भाई को

(पहले पत्र का उत्तर, असमर्थता दिखाते हुए)

कबाड़ी बाज़ार
अम्बाला छावनी
१-७-३५.

प्यारे राम,

तुम्हारा पत्र मिला। क्या ही अच्छा होता कि मैं तुम्हारे साथ डलहौज़ी चल सकती और इस नारकीय गरमी से छुटकारा पाती। परन्तु क्या करूँ, विवश हूँ।

बैंक का छमाही हिसाब हो रहा है, अतः तुम्हारे जीजा जी को दम मारने की भी फुर्सत नहीं मिलती। सबेरे ९ बजे जाते हैं, शाम सात बजे से पहले नहीं आते। ऐसी हालत में उन्हें छुट्टी मिलनी बड़ी कठिन है और ऐसी गरमी में उनको यहाँ छोड़कर जाना भी उचित नहीं है। उनकी तबीयत वैसे ही ठीक नहीं रहती।

जाओ, तुम ही मेरे बदले डलहौज़ी हो आओ और जब खिज़्ज़हार देखने जाना तब मेरा नाम भी ले लिया करना।

मुन्नी तुम्हें बड़ा याद करती है। माता जी को प्रणाम।

तुम्हारी शुभचिंतिका
सुमित्रा

१९—छोटी बहिन की ओर से बड़े भाई को

(मेले का वर्णन)

४७ निस्बत रोड
लाहौर
३०-५-३५

पूज्य भाई साहब,

आपका पत्र बहुत दिन का आया पड़ा था, परन्तु आपके यहाँ से जाते ही हम हरिद्वार चले गये थे, इसलिए उत्तर न दे सकी। क्षमा कीजिएगा।

आप जब से भाभी सहित यहाँ से चले गये हैं, तब से यहाँ उजाड़ सा हो गया है। माता जी कहती हैं कि देखो, नयी बहू मेरे पास कुछ दिन भी नहीं रही। उनकी इस चिंता को दूर करने तथा कुछ दिन के लिए दिल बहलाने के लिए हम हरिद्वार चले गये थे। वहाँ इन दिनों कुम्भ का मेला तथा गुरुकुल का वार्षिकोत्सव था, इसलिए खूब भीड़ इकट्ठी हुई थी। चारों ओर मनुष्य ही मनुष्य दिखाई देते थे। असंख्य यात्री भारत के भिन्न भिन्न प्रान्तों से इकट्ठे हुए थे, जिनमें पंजाबियों की ही अधिकता थी। धर्मशालाओं और मकानों की तो बात ही क्या पेड़ों के नीचे भी रहने की जगह न थी। इसलिए हम तो जाकर गुरुकुल में ठहरे थे।

पर्व के दिन स्नान के समय तो हर-की-पौड़ी के चारों ओर मील भर तक भी कहीं तिल रखने की जगह न थी। लोग एक-एक डुबकी के लिए मर रहे थे, उनका विश्वास था कि उस समय का स्नान उनके सब पाप धो देगा। चारों ओर से धकाधकी हो रही थी,औरतों और बच्चों की तो ख़ैर नहीं थी। इस भीड़ में जहाँ लोग

धर्म कमाने के उद्देश्य से एकत्र हुए थे वहाँ गुंडे भी कम न दीखते थे। कई तो स्नान करती हुई स्त्रियों की ओर ही घूर रहे थे, कई उनके आभूषणों पर हाथ साफ करने की ताक में थे। आप जानते ही हैं कि मुझे तो ऐसी भीड़ में स्नान करना अच्छा लगता ही नहीं, इसलिए मैं तो हर-की-पौड़ी के पास के एक मकान में जिसमें सुमित्राजी ठहरी हुई थीं, बैठी-बैठी सारा नज़ारा देखती रही, पर माताजी नौकर को साथ लेकर नहाने अवश्य पहुँची थीं।

सेवा-समिति के बालकों का प्रबन्ध अच्छा था। वे एक ओर से नहाने वालों को आने देते थे और दूसरी ओर से आगे बढ़ाते जाते थे। मैं तो उनके सेवा-भाव को देखकर हैरान थी। बेचारे सवेरे से शाम तक अपने स्थान में खड़े रहते थे। लोग उन्हें बुरा-भला कहते, पर वे सदा हाथ जोड़े रहते थे।

एक ओर तो इन छोटे-छोटे स्वयं-सेवकों का अद्भुत दृश्य था, दूसरी ओर पैसे-पैसे पर मरने वाले धर्म के ठेकेदार पंडों और मोटे मुस्टंडे महन्तों और भगवे कपड़े लपेटे हुए साधुओं का। ये पंडे यात्रियों को हर तरह से लूटने का यत्न कर रहे थे। मोटे-मुस्टंडे पैसे वाले महन्तों की एक के बाद एक सवारी निकल रही थी। भगवे कपड़े पहने हुए निरक्षर भट्टाचार्य साधु अनूठा धर्मोपदेश कर रहे थे। मुझे तो इनमें रत्ती भर भी विश्वास नहीं है, मैं तो वहाँ माता जी के साथ ही चली गई थी, अतः मेरा दिल तो इधर लगा नहीं; पर माताजी ने अवश्य दस-बारह रुपये पंडों के हवाले कर दिये। सवेरे चार से लेकर शाम चार बजे तक यात्रियों की भीड़ थी। रास्ते में कहीं पैर रखने की जगह न थी, अतः उसी मकान में बंद रहना पड़ा। शाम को अवसर पाते ही वहाँ से निकली और सीधी अपने डेरे पर पहुँची।

उसके बाद तीन-चार दिन हम गुरुकुल का उत्सव देखने को रुके रहे। वहाँ की खुली हवा में मेरा तो खूब दिल लगा।

चार दिन वहाँ ठहर कर हमने वापिस लौटने की ठानी परन्तु गाड़ी में कहीं जगह न मिली। दो दिन स्टेशन पर आते रहे पर दोनों रोज़ वापिस लौटना पड़ा। अन्त में तीसरे दिन गाड़ी में पैर रखने की जगह मिली। रात भर सीट से नीचे रखे हुए अपने बिस्तर पर माताजी, शान्ता और मैं बैठी रहीं। पिताजी हमारे कमरे में न थे, उनकी भी शायद यही हालत रही होगी।

आपका दिल वहाँ कैसा लगा? भाभी जी खूब स्वादु वस्तुएँ बनाकर खिलाती होंगी। पर आप तो दिन भर दफ़्तर चले जाते होंगे, भाभीजी खाली बैठे-बैठे क्या करती होंगी? उनको यहाँ वापिस भेज दीजिए। भाभीजी के और अपने स्वास्थ्य का शीघ्र पता दीजिएगा। माताजी का आप दोनों को आशीर्वाद।

आपकी स्नेहपात्र

सरला

२०—बड़ी बहन की ओर से छोटी बहन को

(घर के काम की आवश्यकता बताते हुए)

कुरसवाँ मुहल्ला

कानपुर

१-१०-३५

प्यारी कान्ता,

माता जी के पत्र से आज पता लगा कि तुम इस बार हिन्दी-रत्न में पास हो गई हो, प्रसन्नता हुई। साथ ही माता जी ने

लिखा है कि परीक्षा खतम हो गई है, फिर भी घर के काम-काज में तुम उनका हाथ नहीं बटातीं । वे चाहे कितनी भी थक जाँय, पर तुम पूछती भी नहीं, यह पढ़ कर हार्दिक खेद हुआ।

कान्ता, थोड़ा-सा पढ़ लिखकर तुम भी और पढ़ी-लिखी लड़कियों की तरह घर के काम-काज से नफ़रत करने लगी हो! क्या तुम पढ़ाई का यही लक्ष्य समझती हो कि दिन भर उपन्यास पढ़ने में और गप मारने में गुज़ार दिया जाय, तो तुम बड़ी ग़लती पर हो। ध्यान रखो कि सुघड़ स्त्री से ही घर की शोभा है, यदि तुम्हारा घर अनपढ़ लड़कियों जैसा भी साफ़ नहीं यदि तुम स्वादिष्ट खाना बनाकर घरवालों को संतुष्ट नहीं कर सकतीं, यदि तुम्हारे माता-पिता तुम से खुश नहीं,यदि नौकर के बिना तुम बिलकुल पंगु हो जाती हो तो तुम्हारी शिक्षा पर इतना पैसा खर्च करना बिलकुल व्यर्थ है। याद रखो, कि अपना काम अपने हाथ से ही करना अच्छा है । जो स्वाद घर की स्त्रियों के हाथ से बने हुए खाने में आता है, वह नौकर की रोटियों में कभी आ ही नहीं सकता।

कान्ता, मैं समझती हूँ तुम मेरी सीख को बुरा न मानोगी, और आगे से कभी किसी को शिकायत का अवसर न दोगी। परमात्मा तुम्हें खुश रखे।

माता जी को प्रणाम।

तुम्हारी शुभचिंतिका

सावित्री

२१—पति की ओर से पत्नी को

७४ हास्पिटल रोड
लाहौर
१८-५-३५

प्राणप्रिये (प्रियतमे)

तुम्हें यहाँ से गये सात-आठ दिन हो गये, पर तुमने अब तक अपनी पहुँच भी नहीं लिखी। मैं रोज़ाना सोचता हूँ कि आज तुम्हारा पत्र आयगा, आज तुम्हारा पत्र आयगा, और दो तीन बार डाकिये को भी देखने जाता हूँ, पर जब डाकिया आता है और तुम्हारी चिट्ठी नहीं लाता, तब मुझे बड़ा निराश होना पड़ता है। पता नहीं, तुम्हें वहाँ जाकर क्या हो जाता है ?

कल धोबी तुम्हारे बाकी बचे कपड़े लाया था, उसमें तुम्हारी एक साड़ी कम लाया है, वह कहता है कि मैं बीबी जी को दे गया था, लिखना क्या बात है।

तुम्हारे भाई का यज्ञोपवीत किस दिन है, मुझे वहाँ किस दिन पहुँचना चाहिये, लिखना। मुन्नी का अब क्या हाल है।

माता जी और पिता जी को प्रणाम कहना, यश तथा वीर को नमस्ते।

तुम्हारा ही
अशोक

पुनश्च:—शरीर की इस कमज़ोर अवस्था में तुम सँभल कर रहना, यह नहीं कि तुम दिनभर काम में लगी रहो, और रात को सखियों के साथ बैठकर ढोलक बजाती रहो। इस तरह नींद हराम करने से फिर बीमार पड़ जाओगी। माना कि तुम्हारे भाई का यज्ञोपवीत है, पर फिर भी तुम्हें अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना जाहिए।

२२—पत्नी की ओर से पति को

(उत्तर)

कूचा नटवाँ
दिल्ली
२१-५-३५

प्राणनाथ (हृदय-वल्लभ)

आपका पत्र मिला। मुझे बड़ा खेद है कि आपको मैंने ऐसी प्रतीक्षा करवाई। क्षमा कीजिएगा।

रास्ते में सफर में मुन्नी की तबीयत बहुत खराब हो गई थी। दो दिन तो उसे बुखार ने छोड़ा ही नहीं। १०४ तक टैंप्रैचर हो जाता था। उसका बुखार कम हुआ ही था कि मेरी तबीयत खराब हो गई। इसीलिए इतनी देरी हो गई।

यश का यज्ञोपवीत २६ तारीख को सवेरे आठ बजे है। आप यहाँ २५ की शाम तक पहुँच जाइयेगा।

धोबी से एक रेशमी साड़ी पहले आ गई थी, वह ठीक कहता था।

आते समय मेरे ट्रङ्क में से मुन्नी के दो रेशमी जम्पर लेते आइयेगा।

मुन्नी की हालत अब बिलकुल ठीक है।

आपकी ही
शीला

पुनश्चः—माता जी मुझे यहाँ बहुत दिन रखना चाहती हैं, पर मैं इस भीड़ में ज्यादा दिन टिकना नहीं चाहती। इसलिए आप खूब ज़ोर डालियेगा।

२३—सहेली को पत्र

(हिन्दी परीक्षाओं के पास करने का प्रयोजन)

कटरा अहलूवालिया
अमृतसर
१४-३-३५

प्रिय सखि (प्रिय दमन)*

तुम्हारा पत्र मिला। तुमने यह पूछा है कि मैं इन हिन्दी-परीक्षाओं के देने में क्यों अपना नाहक समय गँवा रही हूँ। बहन, तुम्हारा सवाल बिलकुल ठीक है। आजकल हमारे सारे देश में जो अंग्रेजियत की लहर चल रही है, उसके अनुसार तुम्हारा कहना ठीक ही है। अभी तक साधारण लोग हिन्दी के ज्ञान की क़द्र नहीं करते। अंग्रेजी पढ़े-लिखे स्त्री-पुरुष हिन्दी-पढ़ी हुई लड़कियों को अनपढ़ ही कहते हैं और उनका तिरस्कार करते हैं। पर बहन, ये भाव क्या हमारी गुलामी को नहीं प्रकट करते!

मैं मानती हूँ कि पुरुषों को पेट पालने के लिए अंग्रेजी का पढ़ना जरूरी हो गया है क्योंकि हम गुलाम हैं। पर हम स्त्रियों को क्या पड़ा है कि हम भी अपनी जातीयता को गँवायें। याद रखो मैं अंग्रेजी से नफ़रत नहीं करती। अपितु यह समझती हूँ कि अंग्रेज़ी जितना पढ़ सकूँ, उतना थोड़ा है। पर जब तक हमें अपने साहित्य, और अपनी भाषा का ज्ञान नहीं तब तक अंगरेज़ी के पीछे भटकने का मैं कभी समर्थन नहीं कर सकती।

मेरे पिता जी भी इन्हीं गुलाम विचारों के कारण मुझे अंग्रेजी ही पढ़ाते रहे, पर अब मैं समझती हूँ कि हमारा जातीय साहित्य

* यदि बराबर की हो तो 'सखि' के जगह उसका नाम या प्यार के लिए किया गया नाम का अपभ्रंश लिखना अधिक उपयुक्त होगा।

हमारे जीवन के लिए, हमारी जाति के लिए कितना आवश्यक है। इसलिए मैं अब अपना समय अपने जातीय साहित्य को पढ़ने में लगा रही हूँ और परीक्षा का लालच इसमें सहायक होता है। अतएव मैं इन परीक्षाओं के पीछे लगी हूँ।

मैं तुम से भी यही अनुरोध करूँगी कि तुम भी इस अंग्रेजियत को छोड़ो। हाँ, तुम यह अवश्य कहोगी कि जिस तरह स्कूल में मैं पहले उपदेश देती थी, उसी तरह अब भी देती हूँ सो बहन, बचपन की आदतें इतनी जल्दी थोड़े ही छूटती हैं।

अब तुम यहाँ कब आओगी, तुम्हें कलकत्ता गये तो बहुत दिन हो गये। अपना हाल-चाल कभी-कभी लिखती रहा करो।

तुम्हारी दर्शनाभिलाषिणी
शकुन्तला

२४—मित्र को पत्र

(छुट्टियाँ किस प्रकार व्यतीत कीं)

शिव निवास, राजा बाज़ार
नयी दिल्ली
२२.९.३५

प्यारे हरि,

बहुत दिन पहले तुम्हारा शिमले से एक पत्र आया था। पर इस बार मैं ग्राम्य-जीवन का आनंद लेने के लिए मामा जी के यहाँ गाँव में चला गया था। सो घर से होकर दुबारा गाँव में पत्र पहुँचते-पहुँचते करीबन १० दिन लग गये। अतः मैंने यही निश्चय किया कि तुम्हें घर पहुँचकर ही पत्र लिखूँगा।

मैंने तो इस बार विचित्र ही जीवन बिताया। गाँव में पहुँचते ही मैंने अपनी उमर के १०-१५ लड़कों से मेल-जोल पैदा

कर लिया । सवेरे ही से मैं उनके साथ खेतों में चला जाता और १०-१२ बजे तक वहीं उनको काम करते देखता और उनके काम में हाथ बँटाता। फिर खाना खाकर कुछ देर आराम करता। उसके बाद मैं उन लड़कों को कुछ देर पढ़ाता, नयी-नयी बातें बताता, और कभी दिल बहलाने को उनके साथ ताश भी खेलता।

शाम होते ही हम सब मामा जी के मकान के बाहर चौपाल पर इकट्ठे हो जाते। वहाँ गाँववाले भी काफी संख्या में पहुँच जाते। मैं उनको अखबार पढ़कर सुनाता। देश की हालत बताता, और उन्हें साफ रहने को कहता। उनसे कहता कि किसी से घृणा न करो, हरिजन भी तुम्हारे भाई हैं, हिन्दू और मुसलमान एक ही भारतमाता के पुत्र हैं, और सब भाई भाई हैं। इसलिए आपस में लड़ना न चाहिए।

वे सब मुझ से बड़ा प्यार करने लग गये थे। जब मैं वहाँ से चला, तो कोई मेरे लिए अपने घर से गुड़ ले आया, कोई मक्का और कोई साग। इस तरह उन्होंने मुझे अपने-अपने ढंग के उपहार दिये।

गाँवों में शिक्षा की कितनी कमी है, कितनी गरीबी है और हम पढ़े-लिखे वहाँ कितना काम कर सकते हैं, इनका अनुभव मुझे इस बार ही हुआ। हरि, तुम शायद नहीं मानोगे कि उस गाँव में कदाचित मुझ से अधिक पढ़े-लिखे एक दो ही होंगे। इसलिए मेरी वहाँ बड़ी इज्जत थी। मैं वहाँ अंधों में काना राजा था।

मैं तो अगले साल भी वहीं जाऊँगा। छुट्टियाँ २५ को खतम हैं, तुम दिल्ली कब पहुँचोगे। अपने माता-पिता को प्रणाम कहना।

तुम्हारा स्नेही

सतीश

२५—मित्र का उत्तर

लोअर बाज़ार
शिमला
२३-९-३५

प्रिय सतीश,

बहुत दिन बाद तुम्हारा पत्र मिला। मैं सोचता था तुम कहाँ चले गये हो जो तुमने इतने दिन तक उत्तर ही नहीं दिया। सो अब पता लगा कि हज़रत नये ही तजरबे करने लगे हैं। तुम्हारा यह स्वभाव कभी न बदलेगा। एक दिन तुम ज़रूर लीडर बनकर रहोगे।

मैं २५ को सवेरे वहाँ पहुँचूँगा। पिता जी के दफ़्तर तो अगले महीने की १२ को दिल्ली आयँगे, सो तब तक तुम्हारा ही मेहमान हूँगा।

शेष मिलने पर—

तुम्हारा अभिन्नहृदय
हरि

२६—मित्र को पत्र

(रुपया उधार मँगाने के लिए)

लोअर बाज़ार
शिमला
२२-९-३५

प्यारे दिनेश,

बहुत दिन से तुम्हें पत्र न लिख सका। कुछ ऐसे ही झंझटों में फँस गया था। आज तुम्हें एक खास कारण से यह पत्र लिख रहा हूँ।

मुझे कोई तीस-पैंतीस रुपयों की एकदम आवश्यकता पड़ गई है। पर किन्हीं कारणों से मैं पिता जी से और भाई साहब से रुपये नहीं लेना चाहता। क्या तुम कम से कम ३०) मनिआर्डर द्वारा वापिसी डाक से भेज सकोगे। मैं समझता हूँ कि तुम 'न' न करोगे। बड़ा उपकार मानूँगा।

दिल्ली आते ही तुम्हें रुपये दे दूँगा।

तुम्हारा
देव

२७—मित्र को उत्तर

(रुपया भेजने में असमर्थता)

कृष्णाश्रम, राजा बाज़ार
नयी दिल्ली
१-१०-३४

प्यारे देव,

तुम्हारा २२ तारीख़ का पत्र मिला। मुझे अत्यधिक खेद* है कि मैं तुम्हारा पहली बार का कहना ही पूरा न कर सकूँगा। कारण यह है आजकल पिताजी पहाड़ से लौट आये हैं, और वे खुद सब काम देख रहे हैं, ऐसी हालत में रुपये भेजने में असमर्थ हूँ। अंत में दुबारा क्षमा माँगता हूँ। आशा है तुम इसका बुरा न मानोगे।

तुम्हारा ही
दिनेश

* असमर्थता व्यक्त करते हुए कई लोग "खेद है" के स्थान पर "शोक है" लिख देते हैं, यह बहुत अशुद्ध प्रयोग है। यह ध्यान रखना चाहिये कि "शोक है" केवल मृत्यु के समय ही लिखा जाता है।

२८—मित्र को पत्र

(रुपये वापिस करने के लिए तकाज़ा)

बाबू मुहल्ला
अजमेर
१-१-३५

प्रिय गुप्ता,

करीबन ६ महीने हुए तुम मुझसे ६०) माँग ले गये थे, उस समय तुमने विश्वास दिलाया था कि तुम पाँच छः दिन में जयपुर पहुँचते ही रुपये वापिस कर दोगे। पर अब इतना अरसा हो गया, तुम्हें तीन-चार पत्र भी डाल चुका हूँ, पर तुम उन पत्रों की पहुँच तक नहीं लिखते। क्या यही तुम्हारी शिष्टता है!

आशा करता हूँ कि तुम अब मुझे बार-बार लिखने को तंग न करोगे, और मित्रता का ध्यान रखते हुए शीघ्र ही रुपये वापिस कर दोगे।

यदि १५ दिन तक तुम्हारे रुपये न पहुँचे तो विवश होकर मुझे तुम्हारे पिता जी से कहना पड़ेगा, और उसके उत्तरदायी तुम ही होगे।

तुम्हारा
जयसिंह

२९—सखी को पत्र (छोटी पर्ची-सी)

(अपनी चीजें वापिस मँगाने के लिए)

प्यारी शीला,

तुम उस दिन कुछ बरतन और कुर्सियाँ लिवा ले गई थी, और कह गई थी कि एक-दो दिन में वापिस कर दूँगी, पर इस बात

को १५ दिन हो गये और उसके बाद तुमने न तो दर्शन ही दिये और न चीजें ही भेजीं।

आज माता जी को पता लग गया, वे मुझ पर गुस्सा होने लगी। कृपया इस आदमी के हाथ वे सब चीजें अवश्य भेज दो।

तुम्हारी

१५-१०-३५ विमला

३०—थोड़े परिचित संभ्रान्त व्यक्ति को

११/ए सैय्यद साली लेन
कलकत्ता
१८-६-३५

मान्य प्रोफ़ेसर साहब,

जब आप छुट्टियों में कलकत्ता में भ्रमण के लिए आये थे तब वकील साहब के घर में आपसे मेरा साक्षात्कार हुआ था, आशा है आप भूले न होंगे। उस दिन यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई थी कि आप भी हमारी ही जाति के हैं।

आज आपको थोड़ा कष्ट देने लगा हूँ, आशा है, आप क्षमा करेंगे।

मैंने सुना है कि पंजाब यूनीवर्सिटी की ओर से कुछ हिन्दी-परीक्षाएँ ली जाती हैं, जिनको पास करने के अनंतर केवल अंग्रेज़ी में मैट्रिक, इंटर और बी.ए. कीं परीक्षाएँ दी जा सकती हैं। क्या आप उन परीक्षाओं के नियम और विवरण भेज सकते हैं, या वहाँ के किसी पुस्तक-विक्रेता को उन परीक्षाओं की विवरण-पत्रिका भेजने के लिए कह देंगे। बड़ी कृपा होगी।

धन्यवाद पेशगी—

आपका अनुग्रहाभिलाषी
रामनाथ अग्रवाल

३१—परिचय पत्र

सिविल लाइन्स
जालंधर
२४-७-३५

प्रिय भल्ला जी,

पत्रवाहक (इस चिट्ठी को लाने वाले) सज्जन श्रीयुत धर्मेन्द्रनाथ जी मेरे घनिष्ठतम मित्रों में से हैं। ये बड़े साहित्य-रसिक और विनोदी जीव हैं, यहाँ डी.ए.बी. कालिज में हिन्दी पढ़ाते हैं। आप को इनसे मिलकर अवश्यमेव बड़ी प्रसन्नता होगी। ये किसी कारण-वश लाला घनश्याम दास जी से मिलना चाहते हैं। मेरा तो लाला जी से ऐसा थोड़ा-सा परिचय है, पर आप तो उनसे खूब परिचित होंगे।

यदि आप इनको उनसे मिला देंगे और इनके काम में पूरी सहायता करेंगे, तो मैं आपका बड़ा कृतज्ञ होऊँगा।

मैं स्वयं आपके पास पहुँचता, परन्तु आजकल कार्य के आधिक्य के कारण यहाँ से उठना मुश्किल है अतएव नहीं आ सका। आशा करता हूँ कि आप मेरी चिट्ठी को ही पर्याप्त समझेंगे, और इनके काम में किसी तरह की त्रुटि न होने देंगे।

कष्ट के लिए क्षमा—

आपका
हरबंसलाल

३२—सर्वथा अपरिचित व्यक्ति को

(परिचय पैदा करने के लिए)

मार्फत जसराज जी वकील
रलाराम बिल्डिंग
जोधपुर
५-७-३५

मान्य बहन,

मैं आपसे सर्वथा अपरिचित हूँ, आपने भी मेरा नाम कभी न सुना होगा। अपनी एक सहेली से सुना था कि आप स्त्री-शिक्षा के काम में पर्याप्त दिलचस्पी लेती हैं, साथ ही यह भी पता लगा था, कि पंजाब में स्त्री-शिक्षा का प्रचार बहुत अधिक है। अकेले लाहौर में ही दर्जनों कन्या-पाठशालाएँ हैं। अतएव आपको यह पत्र लिखने का साहस कर रही हूँ।

हम कुछ बहनें मिलकर यहाँ रियासत में स्त्री-शिक्षा का प्रचार का काम तथा परदा-विरोधी आन्दोलन करना चाहती हैं, हम अभी यह नहीं सोच सकीं कि उस कार्य में हम किस तरह अग्रसर हों। मुझे यह लिखते अत्यधिक लज्जा प्रतीत होती है कि अभी हमारी रियासत भर में कन्याओं के लिए केवल एक ही मिडिल स्कूल है।

क्या आप अपने अनुभवों द्वारा हमें कुछ पथ-प्रदर्शन करायँगी। यदि आवश्यकता हो तो मैं आपके दर्शनों के लिए वहाँ भी आ सकती हूँ।

पत्रोत्तर शीघ्र पाने की आशा करती हूँ, कष्ट के लिए क्षमा। धन्यवाद पेशगी—

आपकी अनुग्रहाभिलाषिनी
सुमित्रा देवी

३३—बहनोई का पत्र साले को

(पुत्रोत्पत्ति का हर्ष-समाचार)

कटरा खुशहाल राय दिल्ली

प्यारे श्याम,

१०-३-३५

तुम यह सुनकर प्रसन्न होगे कि तुम अब मामा हो गये हो। आज सबेरे ४ बजे तुम्हारा भाँजा पैदा हुआ है। जच्चा और बच्चा दोनों ही स्वस्थ हैं।

माता जी और पिता जी को बधाई देना।

स्नेही

रामलाल

३४—बहनोई का पत्र छोटी साली को

(पास होने का हर्ष-समाचार)

कूचा लालचंद, लाहौर

प्यारी शीला,

७-५-३५

आज 'हिन्दी-भूषण' परीक्षा का नतीजा निकल आया है। तुम ४०५ नंबर लेकर पास हो गई हो और अपने विद्यालय में प्रथम रही हो—बधाई। अब मिठाई की कब उम्मीद की जाय!

स्नेही

मथुरादास

३५—साले का पत्र बहनोई को

(बधाई का पत्र)

छत्ताघाट, आगरा

प्रिय भाई साहब,

१३-३-३५

आपका १० तारीख का पत्र मिला। नवजात शिशु के आगमन पर सब को बधाई। परमात्मा उसको चिरंजीव करे।

माता जी विशेष तौर पर बधाई देती हैं, और कहती हैं कि जच्चा और बच्चा दोनों के स्वास्थ्य का बड़ा ध्यान रखें और हर तीसरे दिन उनके हाल का पता देते रहें।

शकुन्तला बहिन जी को नमस्ते।

आपका स्नेहपात्र
श्यामलाल

३६—किसी संस्कार पर भाई को निमंत्रण

कटरा खुशहाल राय
दिल्ली
१-५-३५

प्रिय श्याम जी,

तुम्हारे भाँजे का नाम-करण संस्कार ८ मई एतवार को सुबह सात बजे होना निश्चित हुआ है। इसलिए तुम यह पत्र पाते ही चलने की तैयारी कर दो।

तुम्हारा भाँजा कहता है कि जब से मैं पैदा हुआ हूँ, तब से मेरे मामा ने दिल्ली आना ही छोड़ दिया है, न मेरी नानी ही आती है। सो अब अपने भाँजे को मिलने के लिए जल्दी आओ, साथ ही उसके नाना, नानी, और मासी को भी लेते आओ। यहाँ ६ तारीख तक सब पहुँच जायँ, इसका ध्यान रखना।

शेष मिलने पर—

तुम्हारी प्यारी बहन
शकुंतला

३७—विवाह की बधाई

(पहुँचने की असमर्थता)

मुक्तारामस्ट्रीट
कलकत्ता
१०-५-३५

पूज्य बहन जी,

कान्ता के विवाह पर पहुँचने के लिए आपका निमंत्रण मिला। इस शुभ अवसर पर मेरी तरफ से सबको हार्दिक बधाई।

एक आवश्यक कार्य में फँसा होने के कारण यद्यपि मैं अपने इस शरीर से पहुँचने में असमर्थ हूँगा, तथापि आपको विश्वास दिलाता हूँ कि प्रत्येक मंगल-कार्य में मेरा मन वहाँ उपस्थित रहेगा, तथा आपके आनंद में पूरा भाग लेगा। परमात्मा से यही प्रार्थना है कि कान्ता का सौभाग्य अचल रहे और पारस्परिक प्रसन्नता से यह जोड़ी आदर्श बने।

इस शुभ अवसर पर कान्ता के लिए एक तुच्छ-सी रेशमी साड़ी और कुछ पुस्तकें भेज रहा हूँ, स्वीकार कीजिएगा।

आपकी प्रसन्नता में सुखी
जयदेव

३८—मृत्यु-समाचार

बाँसमंडी लाहौर
१५-९-३५

पूज्य मामा जी,

आपको यह दारुण समाचार भेजते हुए मेरा हृदय फटा जाता है, कि कल शाम अचानक हार्ट-फेल हो जाने के कारण पिता जी हम सबको अनाथ बना कर स्वर्ग सिधार गये।

शोकाकुल
विनोद

३९—मृत्यु-समाचार※

प्यारे श्याम,

तुम्हें यह लिखते हुए हृदय फटा जा रहा है कि बुखार के साथ कई महीने की कशमकश के बाद प्रिय रमेश ने कल सदा के लिए आँखें मूँद ली।

दिल्ली
१-१०-३५

दुखी
रामलाल

४०—समवेदना का पत्र

कटरा खुशहालराय, दिल्ली
२०-९-३५

प्रिय सुमित्रा बहिन,

आज मामी जी से जीजा जी के स्वर्गवास का शोक-समाचार सुन कर सन्न रह गई। इतनी छोटी उमर में ही पता नहीं काल ने उन्हें क्यों हमारे बीच में से उठा लिया। अभी तो तुम्हारे ससुर जी का स्वर्गवास हुए साल भी न हुआ था, कि तुम पर आपत्ति का यह दूसरा भयंकर पहाड़ टूट पड़ा। पता नहीं उस क्रूर विधाता की क्या मंशा है, सच है आपत्ति अकेली नहीं आती।

इस दारुण दुःख के समय तुम्हें किस तरह धीरज बँधाऊँ, यह मुझे स्वयं नहीं सूझता। स्वयं मेरे आँसू ही नहीं रुकते, मैं तुमसे किस तरह धीरज धरने और आँसू रोकने को कहूँ।

पर बहन, यह तो संसार का विधान है उस कर्ता की इच्छा के आगे मनुष्य का वश नहीं चलता। सुख और दुख में ही

※ मृत्यु का अशुभ समाचार भेजते हुए पत्र के चारों ओर या तो काली लकीर फेर दी जाती है, अथवा पत्र का एक किनारा फाड़ दिया जाता है।

जीवन है। अब धैर्य धरकर आर्य-ललनाओं की तरह शेष जीवन बिताओ, और विनोद तथा सरला का लालन-पालन करो। वे ही तुम्हारे सहारे हैं, वे ही तुम्हारे पति-देव की निशानी हैं।

मैं स्वयं वहाँ पहुँचती, पर तुम्हारा रमेश कई दिन से टाइफाइड से चारपाई पर पड़ा है। उसके ठीक होते ही तुम्हारे दुःख में भाग बँटाने को वहाँ पहुँचूँगी।

तुम्हारे दुख में दुखी
शकुन्तला

४१—असफलता पर सहानुभूति

मोहनलाल बिल्डिग
कृष्णागली, लाहौर
१२-७-३५

प्यारी पाछो,

आज 'हिन्दी-भूषण' परीक्षा का परिणाम निकलना था। मैं तीन बजे से ही हिन्दी भवन में परिणाम की प्रतीक्षा के लिए जा बैठी थी। लगभग दो घंटे बाद परिणाम आया। पर उसमें तुम्हारा नाम न देखकर बहुत निराशा हुई। पहले तो मुझे विश्वास ही न हुआ पर जब दो तीन बार गौर से देखा, फिर भी नाम न मिला तब बहुत खेद हुआ। पता नहीं क्यों तुम पास नहीं हो सकीं। तुम्हारी इस असफलता पर मैं हार्दिक सहानुभूति प्रकट करती हूँ और आशा करती हूँ कि इस क्षणिक असफलता से तुम हिम्मत न हारोगी और अगले साल दूना परिश्रम करोगी।

तुम्हारी
पुरुषोत्तमा

अभ्यास

१. चाचा की ओर से भतीजे को एक पत्र लिखो जिसमें पिता की मृत्यु के बाद उसका पालन करने का प्रण हो।

२. माता की ओर से विदेश में गये हुए पुत्र को एक पत्र लिखो जिस में उसे सदाचारी रहने के लिये उपदेश हो।

३. बड़ी बहन की ओर से छोटे भाई को एक पत्र लिखो जिसमें पत्र के साथ राखी भेजने का उल्लेख हो और साथ ही राखी के त्यौहार पर कुछ प्रकाश डाला हो।

४. अपने छोटे साले को एक पत्र लिखो जिस में यह लिखा हो कि तुम्हारी बहन तुम्हें याद करती है, अतः कुछ दिनों की छुट्टी लेकर मिल जाओ।

५. पोते को एक पत्र लिखो जिसमें अधिक कर्ज़ा लेने से मना करते हुए कर्ज़ा लेने के दोष बतलाओ।

६. पिता को एक पत्र लिखो जिस में खर्च के लिये रुपये माँगे हों।

७. फूफे को एक पत्र लिखो जिस में छोटी बहन की मृत्यु का समाचार हो।

८. अपने ससुर को एक पत्र लिखो जिस में बड़े दिनों की छुट्टियाँ उनके पास बिताने की सूचना हो।

९. पिता जी को पत्र में लिखो कि वह तुम्हें इस स्कूल से उठवा कर किसी अन्य स्कूल में भरती करा दें। साथ ही उठवाने का कारण भी लिखो।

१०. अपनी ननद को पत्र में अपने भाई के विवाह पर बुलाओ।

११. अपने मित्रसे छुट्टियों के लिए दिये गये होमटास्क(Home task) पूछने को एक पत्र लिखो।

१२. एक मित्र को अपनी यात्रा का वर्णन करते हुए पत्र लिखो।

१३. हरिद्वार गई हुई अपनी सहेली को पत्र लिखो कि वह तुम्हारे लिए अमुक वस्तु लाये।

१४. घरेलू झगड़ों से तंग आई हुई एक सहेली को उन्हें दूर करने का उपाय लिखो।

कारोबारी पत्र

कारोबारी पत्र कई तरह के होते हैं—व्यापारिक, सरकारी, अर्द्ध सरकारी, प्रार्थना-पत्र और कानूनी आदि; जिनके नमूने आगे दिए गये हैं।

वैयक्तिक पत्रों की तरह कारोबारी पत्रों में भी सबसे पहले पत्र की दाहिनी ओर अपना पता तथा तारीख दी जाती है, उसके बाद कुछ नीचे हट कर पत्र के बाँयीं ओर कम्पनी का नाम या पता, अफ़सर का ओहदा और पता या व्यक्ति-विशेष का नाम और पता दिया जाता है। परन्तु प्रार्थना पत्रों में प्रायः भेजने वाले का पता ऊपर देने के बजाय हस्ताक्षर के नीचे दिया जाता है तथा तारीख़ और शहर का नाम उसी लाइन में बाँयीं ओर रहता है।

उसके बाद कुछ नीचे हटकर प्रशस्ति या संबोधन प्रारंभ होता है। कारोबारी पत्रों में प्रायः बराबर वालों के लिए या व्यापारिक कंपनियों के मालिक तथा मैनेजर के लिए 'महोदय' 'प्रिय महोदय' 'प्रिय महाशय' 'महाशय गण' 'श्रीमन्' 'श्रीमन्तः' आदि प्रशस्तियाँ प्रयुक्त होती हैं। उच्च पदाधिकारियों के लिए प्रायः छोटे व्यक्ति 'महोदय' 'मान्य महोदय' आदि प्रशस्तियाँ प्रयुक्त करते हैं। उनमें 'प्रिय' विशेषण प्रयुक्त नहीं होता। उच्च से उच्च सरकारी अधिकारी भी साधारण जनता के व्यक्तियों के पत्र लिखते हुए 'प्रिय' विशेषण का प्रयोग नहीं करते। क्योंकि वे अपने को जनता का सेवक कहते हैं।

स्त्रियों के लिए, 'श्रीमती जी' या 'महोदया', प्रयुक्त होता है। हिन्दी में बहुधा 'प्रिय बहिन' या 'मान्य बहिन' भी लिख देते हैं।

प्रशस्ति के अनंतर पत्र का कलेवर प्रारंभ होता है। घर के वायु-मंडल और दफ्तर अथवा बाज़ार के वायुमंडल में जितना

अंतर होता है उतना ही वैयक्तिक और कारोबारी पत्रों में होता है। अतः निजू पत्रों में जहाँ आत्मिकता, हास्य, व्यंग और संभाषणशैली को अधिक पसंद किया जाता है वहाँ, कारोबारी पत्रों में स्पष्टता, निश्चितता,पूर्णता,नम्रता,सरलता,और संक्षिप्तता होनी चाहिये। हम पहले लिख चुके हैं कि सरलता और संक्षेप पत्र की जान हैं। परन्तु विशेषकर व्यापारिक पत्रों में तो इनकी अधिक आवश्यकता होती है। जितना नितान्त आवश्यक हो उससे एक शब्द भी अधिक न लिखना चाहिये, दूसरी तरफ स्पष्टता का भी ध्यान रखना चाहिये, ऐसी कोई बात छूटने न पाये जो कि पत्र पाने वाले पर व्यक्त करना आवश्यक हो या जिसके व्यक्त करने से पत्र पाने वाले व्यक्ति पर अच्छा प्रभाव पड़ने की संभावना हो।

इसका ध्यान रखना चाहिये कि पत्र स्वयं गवाही के रूप में प्रयुक्त हो सकता है,अतः पर्याप्त सोच-विचार कर तथा संयत होकर कारोबारी पत्र लिखने चाहियें। यदि कुछ चीजें मंगाने के लिए पत्र लिखना हो, तो उसमें हर एक चीज़, जो मंगानी हो, वह अलग-अलग लाइन में लिखनी चाहिये। साथ ही उसका स्टाइल, माप, वर्णन, बनाने वाले का नाम, तथा संख्या इन सबका उल्लेख कर देना चाहिये। किस तरह चीज़ें मंगानी हैं—रेल द्वारा, डाक द्वारा तथा बिल्टी बैंक द्वारा, वी. पी. द्वारा या रजिस्ट्री द्वारा इन सबका उल्लेख होना चाहिये। यदि पत्र के साथ चेक अथवा रुपया मनिआर्डर से भेजा जा रहा है, तो उसका उल्लेख भी अवश्य करना चाहिये। यदि किसी पत्र का उत्तर देना हो तो उसकी पत्र-संख्या तथा तारीख का भी ज़िक्र करना चाहिये।

कारोबारी पत्रों में नम्रता प्रदर्शन के लिए निम्नलिखित वाक्य और वाक्यांश बहुधा प्रयुक्त होते हैं।

"मैं आपका बड़ा कृतज्ञ होऊँगा (बड़ा उपकार मानूँगा) यदि आप.................का कष्ट करेंगे (की कृपा करेंगे)"

'योग्य सेवा', 'धन्यवाद पेशगी', 'कृपा बनाई रक्खें ।'

'सेवा में सविनय निवेदन है', 'आजन्म आभारी रहूँगा ।'

"मैं नम्रता और आदर के साथ आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूँ (दिलाना चाहता हूँ)"

"पत्रोत्तर शीघ्र पाने की आशा करता हूँ"

पत्र के कलेवर के अनंतर हस्ताक्षर के ऊपर व्यापारिक पत्रों में केवल 'भवदीय' लिखते हैं ।

सरकारी पत्रों में छोटे व्यक्ति बड़ों को प्रायः 'आपका आज्ञाकारी सेवक' 'आपका विनीत 'आपका विनम्र सेवक' आदि लिखते हैं । सरकारी अधिकारी भी जनता के व्यक्तियों को पत्र लिखते हुए इन्हीं शब्दों का प्रयोग करते हैं ।

कारोबारी पत्रों में निजू पत्रों की तरह शिष्टाचार के लिए 'नमस्ते' आदि लिखना उपयुक्त नहीं होता ।

४२—पुस्तक-विक्रेता को

(पुस्तकों की कमीशन आदि पूछते हुए)

मुहल्ला शाह चनचराग़
रावलपिंडी
१५-३-३५

संचालक
हिन्दी भवन, लाहौर

प्रिय महोदय,

हम चार-पाँच लड़कियाँ मिलकर हिन्दी-भूषण परीक्षा की पाठ्य-पुस्तकों के तीन चार सेट तथा उनकी सहायक पुस्तकें

खरीदना चाहती हैं, कुल पुस्तकों की कीमत १००) के लगभग होगी। कृपया भूषण परीक्षा की विवरण-पत्रिका वापिसी डाक से भेजने का कष्ट कीजिये, साथ ही कमीशन की दर भी लिखिये।

धन्यवाद पेशगी—

भवदीया

अमृतलता

पुनश्चः—हम 'रत्न-परीक्षा' की सैकंड हैंड पुस्तकें भी बेचना चाहती हैं कृपया लिखिये कि आप किस कीमत पर उन्हें खरीदेंगे।

४३—पुस्तक-विक्रेता को

(किताबों का आर्डर करते हुए)

संचालक
हिन्दी भवन,
लाहौर

मुहल्ला शाह चनचराग़
रावलपिण्डी
२२-३-३५

प्रिय महोदय,

आपका १८-३-३५ का पत्र (संख्या १८०५) प्राप्त हुआ। धन्यवाद।

कृपया निम्नलिखित पुस्तकें अतिशीघ्र रेलवे पार्सल द्वारा तथा बिल्टी वी. पी. द्वारा भेजकर कृतार्थ करें। पाँच रुपये मनिआर्डर द्वारा अगाऊ भेजे जा रहे हैं।

१, भूषण परीक्षा के तीन पूरे सेट
२. तक्षशिला की कुंजी (बलदेव शास्त्री) २ प्रति
३. हिन्दी भूषण निबंधमाला (शम्भूदयाल सक्सेना) ३ प्रति
४. व्याकरण की प्रश्नोत्तरी (धर्मचन्द्र) २ प्रति

५. व्याकरण के चार्ट (धर्मेन्द्रनाथ) २ प्रति
६. लोकोक्तियाँ और मुहावरे (बहादुरचंद) ३ प्रति
७. इतिहास की प्रश्नोत्तरी दूसरा भाग (जुगुल किशोर) २ प्रति
८. भूषण-प्रश्नपत्र (रामप्रसाद मिश्र विशारद) ३ प्रति
९. सरल-पत्र-लेखन (केशव प्रसाद) ३ प्रति
१०. शिल्पमाला (विद्याधरी) १ प्रति

पुस्तकें चलाते समय अच्छी तरह देख लें कि कोई फटी हुई न हो। यदि कोई पुस्तक खराब हुई तो वापिस की जायगी। पुस्तकों का बिल एक दिन पहले भेजने की कृपा करें।

भवदीया
अमृतलता

४४—पुस्तक-विक्रेता को

(शिकायत)

मुहल्ला शाह चनचराग
रावलपिण्डी
२७-३-३५

संचालक
हिन्दी भवन, लाहौर

प्रिय महोदय,

आपके बिल नं० २५०३ के अनुसार पुस्तकें प्राप्त हुईं। धन्यवाद। परन्तु खेद से लिखना पड़ता है कि इस बार आपने पुस्तक भेजने में बहुत ही असावधानी से काम लिया है, जो आप जैसे प्रतिष्ठित दूकानदार के लिए उचित नहीं प्रतीत होता। शिकायतें निम्नलिखित हैं, आशा है आप इनको दूर करने का समुचित प्रयत्न करेंगे।

१. तक्षशिला-काव्य की एक प्रति में ४९ से ६४ तक पृष्ठ ही नहीं है।

२. विशेष ज़ोर देने पर भी आपने केशव प्रसाद शुक्ल लिखित 'सरल-पत्र-लेखन' की एक प्रति भी नहीं भेजीं।

३. हिन्दी-भूषण प्रश्नपत्र की कीमत आपने १।) लगायी है पर आपकी लिस्ट में केवल १) छपी है। पता नहीं इसका क्या कारण है।

४. आप ने ७½ फीसदी कमीशन देना स्वीकृत किया था, पर बिल में आपने केवल ६¼ फीसदी ही कमीशन काटा है यह सर्वथा अनुचित है।

कृपया उत्तर शीघ्र दें, शेष कमीशन शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

भवदीया
अमृतलता

४५—ग्राहक को

शिकायत का उत्तर

सं० २१०८

तार का पता—'हिन्दीभवन'

हिन्दी-भवन

पंजाब में उच्च कोटि की हिन्दी पुस्तकों की एक-मात्र दूकान

मुद्रक, प्रकाशक
और
पुस्तक विक्रेता

हास्पिटल रोड, (अनारकली)
लाहौर
२-४-१९३६

श्रीमती जी,

आपका २७-३-३५ का कृपा पत्र मिला। धन्यवाद।

हमें इस बात के लिए हार्दिक खेद है कि आप जैसी स्थायी ग्राहक को हमारे व्यवहार से इतनी असुविधा हुई है। हम इसके लिए क्षमा चाहते हैं और आपकी शिकायतों का उत्तर नीचे दे रहे हैं।

१. तक्षशिला काव्य की वह प्रति आप रजिस्ट्री से भेज दीजिए, उसके पाते ही हम आपको नयी पुस्तक रजिस्ट्री से भेज देंगे। आशा है, आप इस कष्ट के लिए क्षमा करेंगी।

२. सरल-पत्र-लेखन के छपने में अभी १०-१५ दिन की देर है, बिल के अंत में जहाँ पुस्तकें न भेजने का कारण निर्दिष्ट किया गया है, वहाँ आप इसका भी उल्लेख पायँगी। पुस्तक के छपते ही आपको सूचना दी जावेगी।

३. १९३२ से १९३५ तक के चार साल के प्रश्नपत्रों की कीमत १) है। परन्तु आपको जो भेजा गया है उसमें १९३१ से ३५ तक पाँच सालों के प्रश्नपत्र उत्तर सहित हैं। अतएव कीमत का फर्क है।

४. कमीशन के विषय में आप यदि हमारे पत्र (संख्या १८०५) को ध्यानपूर्वक पढ़ेंगी तो आपको शिकायत का अवसर न मिलेगा। उसमें स्पष्ट रूप से लिख दिया गया था कि यदि आपका आर्डर १००) के लगभग होगा तो ७॥) फीसदी कमीशन दिया जावेगा। और अगर आपका आर्डर इससे कम हुआ तो केवल ६।) फीसदी कमीशन दिया जावेगा। आपका कुल आर्डर ४९॥) का है। ऐसी दशा में हमारा ६$\frac{1}{4}$ फीसदी कमीशन देना सर्वथा उचित है।

आशा करते हैं कि इस पत्र को पढ़ने के बाद आपको कोई शिकायत न रहेगी और आपको विश्वास दिलाते हैं कि हिन्दी भवन आपको कभी शिकायत का अवसर न देगा। कृपा बनाई रखें, योग्य सेवा लिखती रहें।

भवदीय
धर्मचन्द्र 'विशारद'

४६—दुकानदार को

(रुपयों की रसीद तथा हिसाब साफ करने का)

कोआोपरेटिव सोसाइटी
गवर्न्मेंट हाई स्कूल
अम्बाला
१७-५-३५

मैसर्स रामलाल एण्ड सन्स
बुकसैलर्स, लाहौर

प्रियमहोदय,

पिछले महीने की पहली तारीख को मैंने आपके साथ बैठ कर स्कूल की कोआोपरेटिव सोसाइटी का हिसाब किया था। सोसाइटी के नाम जो रुपया आपका निकलता था, वह नकद दे दिया गया था और करीबन ७५) की किताबें आपको वापिस दी थीं। आपने कहा था कि रुपयों की पक्की रसीद तथा वापिसी किताबों का क्रेडिटनोट मैनेजर साहब के आने पर भेज दिया जावेगा। आज उस घटना को डेढ़ महीना हो चुका है। इस अरसे में मैं आपको दो पत्र डाल चुका हूँ, पर आप किसी पत्र का जवाब तक नहीं देते। खेद है कि आप अपने ग्राहकों के साथ इतना दुर्व्यवहार करते हैं।

आशा करता हूँ कि अब आप हमें इस विषय में अधिक लिखने को विवश न करेंगे। शीघ्र ही पिछले रुपयों की रसीद तथा ७५) का क्रेडिटनोट भेजने का कष्ट करेंगे।

भवदीय
जगदीशचन्द्र
मंत्री

४७—ग्राहक को

(रुपया न भेजने पर दावा)

मैसर्स रामलाल एण्ड सन्स
बुकसैलर्स, लाहौर
१७-५-३५

पत्र संख्या ५०६

पं० नरोत्तमदास जी
कन्या-विद्यालय, लुधियाना

प्रिय महोदय,

गतवर्ष २०-५-३४ को आप हमारे बिल सं० १५३५ के अनुसार ६०॥≡) की पुस्तकें ले गये थे। आपने कहा था कि ये पुस्तकें विद्यालय की कन्याओं के लिए हैं, और आप शीघ्र ही कन्याओं से रुपया इकट्ठा करके भेज देंगे। उसके बाद आपको तीन-चार पत्र लिखे गये हैं पर आपने एक का भी उत्तर नहीं दिया। हमारा आदमी आपके पास रुपये माँगने के लिए गया तो आपने उसको भी टाल दिया। हमें खेद से लिखना पड़ता है कि आपका यह व्यवहार शिष्टता की सीमा का उल्लंघन कर गया है।

इस पत्र द्वारा हम आपसे अन्तिम बार प्रार्थना करते हैं, कि आप वह रुपया शीघ्र ही भेज दें। यदि १५ दिन तक रुपया न मिला तो विवश हो हमें यह मामला वकील के सुपुर्द करना पड़ेगा। ऐसी हालत में पारस्परिक मनमुटाव तथा मुकदमे के खर्चे के आप उत्तरदायी होंगे।

विवशता के कारण हमें इस तरह का पत्र लिखना पड़ा है अतः हम इसके लिए क्षमा माँगते हैं और अब भी आशा करते हैं कि आप शीघ्र ही रुपये भेज कर पुराने व्यवहार को पुनः स्थापित कर देंगे। योग्य सेवा—

भवदीय
रामलाल
संचालक

४८—पत्र के मैनेजर को

(इश्तिहार प्रकाशित करने के लिए)

शान्ति भवन
अम्बाला छावनी
२८-१-३५

मैनेजर
दैनिक हिन्दी मिलाप, लाहौर

प्रिय महोदय,

आपका पत्र (संख्या २५०३—तारीख २५ जनवरी १९३५) मिला साथ ही विज्ञापन की दर का कार्ड मिला। आपके लेखानुसार ७॥) विज्ञापन का खर्च मनिआर्डर द्वारा भेज रहा हूँ। कृपया निम्नलिखित विज्ञापन ४ वार एक-एक दिन छोड़कर प्रकाशित करने का कष्ट करें।

आपका
श्यामस्वरूप

आवश्यकता

'हिन्दी भूषण' तथा मिडिल की दो लड़कियों को पढ़ाने के लिए एक अनुभवी शिक्षिका की आवश्यकता है। जिसे हर समय कन्याओं के साथ रहना होगा, और गरमियों में पहाड़ पर साथ ही जाना होगा। अंगरेज़ी का ज्ञान रखने वाली महिला अधिक पसंद की जावेगी। खाना और रहना मुफ्त। वेतन योग्यतानुसार। पत्र-व्यवहार का पता—

श्यामस्वरूप रईस,
अम्बाला छावनी

४९—पत्र के मैनेजर को

(ग्राहक बनने के लिए)

अमृतसर
२५-१२-३४

संचालक
विशालभारत, कलकत्ता

प्रिय महोदय,

मैं आपके मासिक पत्र विशाल-भारत का एक वर्ष के लिए ग्राहक होना चाहता हूँ। कृपया नीचे लिखे पते पर नये साल का पहला अंक वी. पी. द्वारा भेजने का कष्ट करें।

पता—
मार्फत रघुवर दयाल जी रईस
कटरा शेरसिंह, अमृतसर

भवदीय
श्यामलाल

५०—पत्र के संपादक को

(सूचना प्रकाशित करने के लिए)

संपादक
दैनिक मिलाप, लाहौर

प्रियमहोदय,

कृपया अपने लोक-प्रिय पत्र में निम्नलिखित सूचना प्रकाशित कर कृतार्थ कीजिए।

धन्यवाद पेशगी—

भवदीय
श्यामाचरण
मंत्री, हिन्दी प्रचारिणी सभा

"हिन्दी प्रचारिणी सभा लाहौर की ओर से रविवार, २७ जन-

वरी १९३५ को शाम ६ बजे परीमहल में श्री मदनमोहन जी एम.ए., एल.एल. बी के सभापतित्व में "सहशिक्षा प्रणाली भारत के लिए लाभदायक है या हानिकारक" इस विषय पर वाद-विवाद होगा। पक्ष में बोलने वाले वक्ताओं में से डाक्टर रामप्यारी नन्दा, कुमारी सुशीला बत्रा तथा प्रो० हुकमचंद के नाम उल्लेखनीय हैं तथा विपक्ष का नेतृत्व पं० दुर्गाप्रसाद जी शास्त्री एम. ए., एम. ओ. एल करेंगे। सर्वसाधारण से प्रार्थना है कि नियत समय पर दर्शन देकर कृतार्थ करें।"

५१—हैडमास्टर को

(बीमारी के कारण छुट्टी के लिए)

सेवा में—

श्रीयुत हैडमास्टर साहब

डी. ए. वी. हाई स्कूल, लाहौर

मान्यवर

सेवा में सविनय निवेदन है कि कल फुटबाल के मैच में चोट लग जाने के कारण मैं चलने-फिरने तथा स्कूल में उपस्थित होने में असमर्थ हो गया हूँ (या सेवा में सविनय निवेदन है कि मुझे चार दिन से रोज़ाना बुखार आ रहा है) अतएव कृपया मुझे आज से एक हफ्ते की छुट्टी देकर कृतार्थ करें।

डाक्टर साहब का सार्टिफिकेट साथ भेज रहा हूँ।

आपका आज्ञाकारी शिष्य

अर्जुनदेव

९ वीं श्रेणी (बी. सैक्शन)

लाहौर

१५-५-३५

५२—मुख्याध्यापिका को

(बहिन के विवाह पर उपस्थित होने के लिए, छुट्टी का आवेदनपत्र)

सेवा में—

मुख्याध्यापिका

आर्य पुत्री पाठशाला, हरियाना

मान्य बहन जी

सेवा में सविनय निवेदन है कि मेरी बड़ी बहन का शुभ-विवाह ५ मार्च को होना निश्चित हुआ है, उसके उपलक्ष्य में हमारे घर में ४ मार्च से ८ मार्च तक बड़ा समारोह होगा, अतएव इन दिनों में मैं स्कूल में उपस्थित होने में असमर्थ हूँ। आशा है आप मुझे इन दिनों की छुट्टी देकर कृतार्थ करेंगी।

आपकी आज्ञाकारिणी

शकुन्तला भल्ला

२५-५-३५

८वीं श्रेणी

५३—प्रधानाध्यापक को

(जुर्माना माफ करने के लिए)

सेवा में

प्रधानाध्यापक

एंग्लो संस्कृत हाई स्कूल, दिल्ली

मान्यवर

सेवा में सविनय निवेदन है कि इस बार पिता जी को वेतन देर में मिलने के कारण मैं स्कूल की फीस ठीक समय पर नहीं दे सका। इस लिए मुझ पर ।) जुर्माना कर दिया गया है।

मैं अब तक सदा ठीक समय पर फ़ीस देता रहा हूँ, और यह पहला ही अवसर है, जब कि मैं समय पर फ़ीस नहीं दे सका। अतएव सविनय प्रार्थना है, कि इस बार मेरा जुर्माना माफ करके आप मुझे कृतार्थ करेंगे।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
चन्द्रहंस
८ वीं कक्षा

दिल्ली
१८-३-३५

५४—प्रधानाध्यापक को

(सर्टिफिकेट के लिए)

सेवा में

प्रधानाध्यापक,
सनातनधर्म-हाई स्कूल, अमृतसर

मान्य महोदय,

सेवा में सविनय निवेदन है कि मेरे पिताजी की बदली यहाँ से जालंधर हो गई है। मुझे उनके साथ शीघ्र ही जालंधर जाना पड़ेगा। अतः विवश हो मुझे यह स्कूल छोड़ना पड़ रहा है, आशा करता हूँ कि आप मुझे स्कूल का सार्टिफिकेट देकर कृतार्थ करेंगे, जिससे मुझे जालंधर के किसी स्कूल में भरती होने में कठिनता न हो।

आपकी इस कृपा का मैं सदा अभारी रहूँगा।

आपका
आज्ञाकारी शिष्य
गौतम
९ वीं कक्षा

अमृतसर
२५-५-३५

५५—प्रधानाध्यापक को

(फीस माफ करने के लिए)

सेवा में—

प्रधानाध्यापक

रामजस हाई स्कूल

दरियागंज, दिल्ली

मान्यवर,

सेवा में सविनय निवेदन है कि मैं इस स्कूल में गत तीन वर्ष से पढ़ रहा हूँ, और सदा अपनी जमात में अच्छे नंबरों में पास होता रहा हूँ। सब अध्यापक मेरे आचरण से सदा प्रसन्न रहे हैं। इसी मास की ३ तारीख को मेरे पिता जी का अचानक स्वर्गवास हो गया है। अब मेरी विधवा माता जी के ऊपर सारे कुटुम्ब के भरण-पोषण का भार आ पड़ा है। ऐसी अवस्था में मैं स्कूल की फीस देने में सर्वथा असमर्थ हूँ और आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप कृपया मेरी फ़ीस माफ़ कर मुझे कृतार्थ करें, अन्यथा विवश हो मुझे अपनी भावी शिक्षा बंद करनी पड़ेगी।

इस महान उपकार के लिए मैं आपका आजन्म आभारी रहूँगा।

आपका

आज्ञाकारी शिष्य

भवानीदत्त

दिल्ली

२२-३-३५

५६—प्रधानाध्यापक को

(छुट्टी के लिए)

सेवा में—

प्रधानाध्यापक,

सनातन धर्म हाई स्कूल, होशियारपुर

मान्य महोदय,

सविनय निवेदन है कि मुझे अभी घर से तार प्राप्त हुई है कि मकान से गिर जाने के कारण मेरी धर्मपत्नी को सख़्त चोट आई है, और मेरी वहाँ उपस्थिति आवश्यक है। अतएव प्रार्थना है कि मुझे कल १२ तारीख से १६ तारीख तक की छुट्टी प्रदान कर कृतार्थ करें।

भवदीय*

रामकृष्ण शास्त्री

हिन्दी-अध्यापक

होशियारपुर

११-३-३५

---

* अंगरेज़ी तरीके के अनुसार यहाँ पर 'आपका आज्ञाकारी सेवक' लिखा जायगा। परन्तु अध्यापक और प्रधानाध्यापक सहकारी ही होते हैं अतएव हिन्दी में ऐसे स्थान में केवल 'भवदीय' अथवा 'आपका आज्ञाकारी' इतना ही लिखा जाता है। पर यह ध्यान रखना चाहिये कि दफ्तरों में उच्चपदाधिकारी को पत्र लिखते हुए हर हालत में नीचे 'आज्ञाकारी सेवक' लिखा जाना चाहिये।

५७—संस्था के मंत्री को

(आवश्यकता के उत्तर में नौकरी के लिए आवेदन पत्र)

सेवा में—

मंत्री, महिला-महाविद्यालय, लाहौर

मान्य महोदय,

इस मास के ५ तारीख के दैनिक मिलाप से पता लगा है कि आपके महाविद्यालय में मिडिल की कक्षाओं के लिए एक हिन्दी अध्यापिका की आवश्यकता है। मैं सविनय अपने आपको उस पद के लिए प्रस्तुत करती हूँ।

अपनी योग्यता के विषय में मैं इतना ही निवेदन करना चाहती हूँ कि मैं पंजाब यूनीवर्सिटी की 'हिन्दी-भूषण' परीक्षा पास हूँ, साथ ही मैंने पंजाब शिक्षा-विभाग की मिडिल तथा एस. वी परीक्षाएँ प्रथम कक्षा में पास की हैं। गत चार वर्ष से कमालिया (ज़िला लायलपुर) की आर्यपुत्री-पाठशाला में हिन्दी पढ़ाने का काम कर रही हूँ, परन्तु वहाँ रहते हुए मैं अपनी भावी उन्नति नहीं कर सकती, अतएव मैं लाहौर आना चाहती हूँ।

यूनीवर्सिटी तथा शिक्षा-विभाग के सर्टिफिकेट साथ में भेज रही हूँ।

मैं आशा करती हूँ, और आपको विश्वास दिलाती हूँ कि यदि आप मुझे यह पद प्रदान करने की कृपा करेंगे, तो मैं आपको अपने कार्य से संतुष्ट करने में कोई कसर न रक्खूँगी। साथ ही इस उपकार के लिए आजन्म आपकी आभारी रहूँगी।

धन्यवाद सहित—

आपकी विनम्र सेविका

सुशीला देवी

हिन्दी-भूषण ऐस. वी.

अध्यापिका, आर्य पुत्री पाठशाला

कमालिया

६-५-३५

५८—हैडमास्टर को

(त्यागपत्र)

सेवा में—

हैडमास्टर,

बालमुकुंद खत्री हाई स्कूल, अमृतसर

महोदय,

सेवा में सविनय निवेदन है कि जब मुझे स्कूल में नौकरी दी गई थी, तब यह विश्वास दिलाया गया था कि यदि मेरा कार्य सन्तोषजनक हुआ तो मुझे शीघ्र ही तरक्की दे दी जायेगी। तदनुसार मैं गत दो वर्ष से निरंतर वेतन-वृद्धि की प्रार्थना करता रहा हूँ, परन्तु आपने और स्कूल की कमेटी ने अब तक उस पर कभी ध्यान नहीं दिया। अतएव विवश हो मैं नियमानुसार पद त्याग करने का एक महीने का नोटिस दे रहा हूँ। आशा है आप मेरा त्याग-पत्र कमेटी में उपस्थित करने की कृपा करेंगे, और आज से एक महीने के भीतर (ता० २८-३-३५ तक) मुझे स्वतंत्र कर देंगे।

आपका आज्ञाकारी

२९-२-३५

रवि प्रताप शास्त्री. बी. ए.

हिन्दी-संस्कृत अध्यापक

५९—पोस्टमास्टर को

(पता बदलने के लिए)

पोस्टमास्टर,

लाहौर

महोदय,

सेवा में सविनय विवेदन है कि कल १५ जुलाई से मैं कृष्णा गली नं० २ को छोड़ कर अपना घर कूचा लालचन्द,एबक स्ट्रीट

(अनारकली) में बदल रहा हूँ। अतः आपसे सनम्र प्रार्थना करता हूँ, कि कृपया मेरे सब पत्र, पार्सल और मनीआर्डर आदि भविष्य में उसी पते पर भेजने का कष्ट करें।

धन्यवाद सहित—

आपका
मुन्शीराम नारंग
कृष्णा गली नं० २. लाहौर

६०—पोस्टमास्टर को

(शिकायत)

कृष्णविलास
अनारकली, लाहौर
२५-५-३५

पोस्टमास्टर,
लाहौर.

महोदय,

मैं नम्रता और आदर के साथ आपका ध्यान इस ओर दिलाना चाहता हूँ कि जब से अनारकली के इलाके में नया डाकिया लगा है तब से डाक कभी नियमित तौर पर नहीं आ रही। कभी दो बजे आती है और कभी चार बजे। इसके साथ ही कभी मेरे यहाँ किसी और के पत्र आ जाते हैं, और कभी वह मेरे पत्र दूसरों को दे जाता है। उस व्यक्ति को इस काम का अभी अनुभव ही नहीं प्रतीत होता और ऐसे अनुभव-हीन व्यक्ति को इतना उत्तरदायित्व का काम देना ठीक नहीं प्रतीत होता।

आशा है आप इस बात की जाँच करके समुचित प्रबंध करने की कृपा करेंगे।

भवदीय
रामचन्द्र बी. ए.

६१—उत्तर

पोस्टमास्टर

जनरल पोस्ट आफिस, लाहौर

सेवा में

श्री रामचन्द्र बी. ए

कृष्णविलास

अनारकली, लाहौर

पत्र संख्या १५५३५

तारीख २८-५-३५

महोदय,

विषय, डाकिये की शिकायत

आपका २५-५-३५ का पत्र मिला। मुझे खेद है कि आपको ऐसी शिकायत का अवसर मिला। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि शीघ्र ही इस विषय में जाँच की जावेगी और भविष्य में आपको ऐसी शिकायत का अवसर न मिलेगा।

आपका आज्ञाकारी सेवक
मुहम्मद शरीफ एम. ए.
पोस्टमास्टर, लाहौर

६२—उच्चपदाधिकारी को

(बदली के लिए)

सेवा में—

डिस्ट्रिक्ट इन्स्पेक्टर ऑफ स्कूल्स

लाहौर डिविजन, लाहौर

थ्रू-हैडमास्टर, गवर्न्मेंट हाई स्कूल, बागवानपुरा

मान्य महोदय,

अत्यंत नम्रता और आदर के साथ निवेदन करता हूँ कि जब

से मैं गुजराँवाला से बदल कर इस स्कूल में आया हूँ, तब से मेरा और मेरी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। यहाँ का जलवायु हम दोनों को अनुकूल नहीं बैठा।

इसके साथ ही मेरे वृद्ध माता-पिता गुजराँवाला में रहते हैं, जिनकी देख-भाल करने वाला एक-मात्र मैं ही हूँ, मेरे यहाँ आजाने से वे बड़े कष्ट में दिन बिता रहे हैं।

इन अवस्थाओं में मैं आपसे सविनय प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे फिर वापिस गुजराँवाला भेजने की आज्ञा देकर कृतार्थ करेंगे।

यहाँ मैं आपकी सेवा में यह भी निवेदन करना चाहता हूँ कि गुजराँवाला के संस्कृत-अध्यापक से मैंने बात की है, और वे यहाँ आने के लिए राज़ी हैं।

आशा है आप मेरी प्रार्थना स्वीकार कर मुझे उपकृत करेंगे। इस उपकार के लिए मैं आपका आजन्म आभारी रहूँगा।

मैं हूँ
श्रीमन्
आपका आज्ञाकारी सेवक
वेदव्रत शास्त्री ओ. टी.

६३—साधारण शिकायत

सेवा में—
हैल्थ आफिसर,
म्युनिसिपल कमेटी, लाहौर

महोदय,

हम कूचा लालचंद एबक स्ट्रीट (अनारकली) में रहने वाले

निम्न-लिखित व्यक्ति नम्रता और आदर के साथ इस कूचे की गंदी अवस्था तथा सफ़ाई के कुप्रबंध की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं। कूचा लालचंद अनारकली बाज़ार के पिछवाड़े में है तथा बिलकुल उसके साथ लगा हुआ है। और इसमें प्रायः अनारकली के प्रतिष्ठित दुकानदारों के ही मकान हैं। फिर भी इसकी नालियों की सफाई की ओर कुछ भी ध्यान नहीं दिया जाता। इकट्ठा हुआ हुआ कूड़ा सवेरे से शाम तक पड़ा-पड़ा सड़ता रहता है, पर इधर कोई गाड़ी नहीं आती। इस कारण यहाँ मच्छरों की बहुतायत हो रही है, और बीमारी फैलने का भी डर है।

आशा है आप इस ओर ध्यान देंगे और शीघ्र ही इसका समुचित प्रबंध करेंगे।

भवदीय
भगतराम (मालिक भगतराम एण्ड ब्रदर्स अनारकली)
चुनीलाल (मालिक न्यू इलेक्ट्रिक स्टोर्स, अनारकली)
कुंदनलाल (इरीगेशन डिपार्टमेंट)

१५-५-३५

विविध—निमंत्रन पत्र हुण्डी, रसीद आदि

निमंत्रण पत्र तथा अभिननंदन पत्र आदि की लेखन-प्रणाली में हमने बहुत कर के पाश्चात्य लेखन-प्रणाली का अनुकरण किया है। पाश्चात्य भाषाओं में भिन्न भिन्न समयों के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के निमंत्रण पत्र भेजने के नियम स्थिर हो चुके हैं। हमारे यहाँ भी वैसे ही नियम बनते जा रहे हैं। आगे उनके कुछ उदाहरण दिये जाते हैं :—

१—पुत्र के विवाह पर निमंत्रण

श्री ——————————————————————————— जी

मेरे सुपुत्र चि० कमलनयन का शुभ-विवाह जोधपुर-निवासी श्री सुगणचंद जी पाटनी की सुपुत्री कुमारी प्रकाशवती के साथ रविवार, मिति माघ कृष्णा ६ तदनुसार २५ जनवरी १९३५ को होना निश्चित हुआ है। मैं आपको इस शुभ अवसर पर सप्रेम निमंत्रित करता हूँ और आशा करता हूँ कि आप निम्नलिखित अवसरों पर पधार कर मुझे कृतार्थ करेंगे।

भोज—शुक्रवार, २३ जनवरी १९३५, शाम ७½ बजे।

सेहराबंदी—शनिवार, २५ जनवरी १९३५, शाम ८½ बजे।

आपका दर्शनाभिलाषी

चिरंजीतलाल

जयपुर

१७-१-३५

२—विवाह पर निमंत्रण

अपने सुपुत्र

चि० नारायण दत्त भल्ला

के

शुभ-विवाह के उपलक्ष्य में

निम्नलिखित अवसरों पर

मैं आप को सप्रेम निमन्त्रित करता हूँ

आशा है, आप मेरे मकान पर दर्शन दे कर कृतार्थ करेंगे।

भोज—रविवार ३ फरवरी १९३५ सायंकाल ७॥ बजे

घोड़ी—सोमवार ४ फरवरी १९३५ सायंकाल ८॥ बजे

भवदीय

बांकेलाल भल्ला

आशा सदन

लकड़मण्डी, अमृतसर

३—कन्या के विवाह पर निमंत्रण

श्री ———————————————————————— से

सेवा में सविनय निवेदन है कि मेरी सपुत्री कुमारी सावित्री देवी हिन्दी-प्रभाकर का शुभ-विवाह लुधियाना निवासी बाबू दौलतराम गुप्ता एम. ए., एल-एल. बी. के सुपुत्र श्री मणिराम गुप्ता बी.ए. के साथ १५ श्रावण संवत् १६६१ तदनुसार ३० जुलाई १६३४ को होना निश्चित हुआ है। आप से विनीत प्रार्थना है कि निम्नलिखित सुअवसरों पर मेरे घर पर पधार कर मुझे कृतार्थ करें।

मिलनी और विवाह-संस्कार ... ... ३० जुलाई ... ८ बजे शाम
बारात की विदा ... ... ३१ जुलाई ... २ बजे दोपहर

लक्ष्मी निवास
अनारकली, लाहौर

दर्शनाभिलाषी
रामनाथ महाजन

४—प्रीति-भोज पर निमंत्रण

मेरे सपुत्र

चि० श्री पृथ्वीराज कपूर

के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में

२८ नवम्बर, १६३४, बुधवार को; ८॥ बजे सायंकाल मोरी दरवाज़ा के बाहर वाले बाग में एक **प्रीति-भोज** होगा।

श्री ———————————————————————— से

सविनय प्रार्थना है कि इस शुभ अवसर पर पधार कर कृतार्थ करें।

कपूरनिवास
अनारकली, लाहौर

दर्शनाभिलाषी—
देवराज कपूर

५—पुत्र-नामकरण या मुण्डन पर निमंत्रण

श्री———————————————————————————जी

मेरे नवजात-शिशु का नाम करण संस्कार (मेरे सुपुत्र चि. सत्यकाम का मुण्डन संस्कार) रविवार आषाढ़ ४ सुदी संवत् १९८१ तदनुसार १५ जुलाई सन् १९३४ को प्रातः काल ८½ बजे होना निश्चित हुआ है। आशा है आप सपरिवार नियत समय पर पधार कर मुझे कृतार्थ करेंगे।

दर्शनाभिलाषी
रामचन्द्र महाजन

शान्ति निवास
निस्बत रोड, लाहौर

६—जल-पान का निमंत्रण

श्रद्धेय बाबू मधुसूदन दत्त भटनागर

के

स्वागतार्थ

गोपालचन्द्र एम. ए. द्वारा

रविवार, २५ जनवरी १९३५ को शाम ६—३० बजे

मूलचंद बिल्डिंग, नीलागुम्बद, अनारकली लाहौर में

जलपान

का आयोजन किया गया है।

श्री———————————————————से

प्रार्थना है कि वे उस अवसर पर दर्शन देने की कृपा करें।

आने की सूचना इस पते पर दें :—

श्यामनिवास,
अनारकली, लाहौर

७ -- पुरस्कारवितरणोत्सव पर निमंत्रण

कन्यामहाविद्यालय लायलपुर की मैनेजिंग कमेटी के सदस्य
श्री -- से
प्रार्थना करते हैं कि वे सोमवार, १४ जनवरी १९३५ को
शाम ६ बजे महाविद्यालय-भवन में होने वाले

पुरस्कार-वितरणोत्सव

पर इष्ट मित्रों सहित पधारने की कृपा करें। पुरस्कार-वितरण के साथ-साथ कन्याओं के खेल और मधुरगान भी होंगे। श्रीमती शकुन्तलादेवी जी बी. ए. ने कृपा करके सभानेत्री पद को सुशोभित करना स्वीकार कर लिया है।

गोविंद प्रसाद एम.ए., एल.एल बी.,
प्रधान

८

डी० ए० वी० हाई स्कूल
जालंधर
१५-१२-३५

प्रियमहोदय,

हमारे स्कूल का वार्षिक पारितोषिक-वितरणोत्सव, बुधवार २५ दिसम्बर १९३५ की शाम ६ बजे स्कूल के मैदान में होना निश्चित हुआ है। ला० धनपत मल जी बार-एट-लॉ, ने कृपा करके सभापति के पद को सुशोभित करना स्वीकार कर लिया है।

आपसे प्रार्थना है कि सब शिक्षा-प्रेमी मित्रों के सहित नियत समय पर पधार कर उत्सव की शोभा बढ़ावें।

दर्शनाभिलाषी
गोपाल चन्द सेठी

९—उत्सव पर निमंत्रण

हिन्दी प्रचारिणी सभा
जयपुर
१९-७-३५

प्रियमहोदय,

'हिन्दी प्रचारणी सभा' जयपुर का वार्षिक उत्सव १५ जुलाई से १८ जुलाई तक बड़े समारोह के साथ होना निश्चित हुआ है। उत्सव के साथ में कवि-सम्मेलन तथा एक साहित्यिक नाटक का भी आयोजन किया गया है। वार्षिकोत्सव के सभापति देश-भक्त श्रद्धेय मधूसूदन दत्त जी होंगे, और कवि-सम्मेलन की सभानेत्री प्रसिद्ध कवियित्री श्रीमती गोपाल कुमारी जी 'रसिकप्रिया' होंगी। आपसे विनीत प्रार्थना है कि आप भी इस शुभ अवसर पर पधार कर उत्सव की शोभा बढ़ावें।

आपका दर्शनाभिलाषी
श्याम स्वरूप विशारद
मंत्री

१०—हाकी-मैच का चैलेंज

सेवा में—
कप्तान
गवर्न्मेंट हाई स्कूल हाकी दल, अम्बाला

महोदय,

हमारा डी. ए. वी. हाई स्कूल जालंधर का हाकीदल आपके स्कूल के हाकी दल से मैच (साम्मुख्य) करना चाहता है। मैच (साम्मुख्य) आपकी इच्छानुसार आपके या हमारे शहर में हो सकता है। कृपया स्वीकृति देकर तथा स्थान और समय का निश्चय कर शीघ्र पता देने का कष्ट करें।

आपका अनुग्रहाभिलाषी
बाबूराम
कप्तान,हाकी दल डी.ए.वी., हाई स्कूल
जालंधर

जालंधर
१५ मार्च १९३५

अभिनंदन पत्र

(देश के हृदय-सम्राट् पूज्य महात्मा गाँधी की सेवा में)

परम वंदनीय महात्मा,

अपने प्रान्त की ओर से हम आपका स्वागत करते हैं। निस्संदेह आपकी पंजाब पर अत्यंत कृपा है, जो इस बुजुर्गी की उम्र में ११ मास के दौरे से थके होने पर भी आपने यहाँ आने का कष्ट उठाया। आपकी इस कृपा के हम चिर-ऋणी रहेंगे। आप स्वागत की सीमा से परे हैं, और हर्ष के उन्माद से हमारी वाणी भी मौन है, हम कैसे कहें कि आज हम कितने सुखी हैं।

सदियों से दलित हरिजनों के उद्धार का जो काम आपने अपने गौरव-युक्त हाथों में लिया है, उस कार्य को अब तक पंजाब में कई संस्थाएँ और व्यक्ति यथाशक्ति पूर्ण करने की चेष्टा करते रहे हैं। किन्तु बापू, आपने अस्पृश्यता-निवारण को जो उत्तेजन दिया, वह अपूर्व है। जो कार्य आपकी आध्यात्मिक प्रेरणा से केवल डेढ़ वर्ष में हो सका, वह दूसरों द्वारा चालीस वर्ष में भी न हो सका था। प्रान्त ने आपके आदेशों के अनुसार हरिजन सेवा-कार्य करने का अपनी योग्यता और शक्ति भर प्रयत्न किया है। किन्तु हम अनुभव करते हैं कि अभी मंजिल बहुत बाकी पड़ी है और आशा करते हैं आपकी यह यात्रा हमें शक्ति, साहस, बल और लगन का वरदान देगी।

अंत में हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने और अस्पृश्यता के कलंक को जड़ मूल से मिटा देने के लिए वह चिरकाल तक आपके जीवन को अपने आशीर्वाद की भाँति हम पर छाया करते रहने दे।

१७ जुलाई १९३४

हम हैं आपके चिरकृतज्ञ
लाहौर निवासी

अभिनन्दन-पत्र

(श्री पुरुषोत्तम लाल जी, शास्त्री, बी. ए. की सेवा में)

मान्य महोदय,

हर्ष और विषाद के इस सम्मिलन में आज हमारी जो दशा है उसका वर्णन हम नहीं कर सकते । हर्ष हमें इस बात का है आप यहाँ से दूसरी जगह उच्च पद पर जा रहे हैं, और विषाद इस कारण है कि आज आप हमसे बिछुड़ रहे हैं।

आपकी रसिकता के कारण स्कूल में जो एक साहित्यिक वायु-मंडल बना रहता था, आपकी प्रेरणा से हम नवयुवकों में जो हिन्दी और संस्कृत के प्रति प्रेम के भाव पैदा होते थे,सबसे अधिक आपके विनोदी स्वभाव के कारण विद्यार्थियों में जो प्रसन्नता की लहर सदा बहा करती थी, आपके यहाँ से चले जाने पर वे सब रहेंगे या नहीं इसमें हमें संदेह है।

स्कूल की हिन्दी प्रचारिणी सभा, वाग्वर्द्धिनी सभा, और हाकी दल के तो आप जान थे। आप के ही प्रोत्साहन से वे दिन-दूनी उन्नति कर रहे थे। अब आपके यहाँ से चले जाने से उनको कितनी क्षति होगी, इसका भी हम अनुमान नहीं कर सकते।

हम तो केवल यह सोचकर दिल को मना लेते है कि मिलना और बिछुड़ना इस संसार का धर्म ही है, जहाँ हमें आपके बिछोह से दुःख हो रहा है वहाँ दूसरे आपको पाकर अपने को सौभाग्य-शाली समझेंगे।

अंत में, गुरुवर,आप से यही प्रार्थना है कि हमें कभी-कभी याद करते रहा करें, और साल में एक-आध बार अपने दर्शनों से अवश्य कृतार्थ करते रहें।

आपकी प्रीति-सूत्र में बँधे हुए हम हैं
आपके आज्ञाकारी शिष्य
रामजस हाई स्कूल के विद्यार्थी

१४-५-३५

प्रमाण-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि श्रीयुत पुरुषोत्तम लाल जी शास्त्री बी. ए. पाँच साल तक रामजस हाई स्कूल दरया-गंज दिल्ली में संस्कृत के अध्यापक का काम करते रहे हैं। वे बड़े ही सदाचारी व्यक्ति हैं और उनके पढ़ाने की शैली से सब विद्यार्थी तथा उनके स्वभाव से पाठशाला के सब अधिकारी संतुष्ट थे। इसके अतिरिक्त वे स्कूल की सभाओं के कार्य में पर्याप्त भाग लेते थे। अब उच्च-पद की प्राप्ति के लिए वे इस स्कूल को छोड़ रहे हैं।

दामोदरलाल एम. ए. बी. टी.
हैडमास्टर
रामजस हाई स्कूल, दिल्ली

१५-५-३५

रुपयों की रसीद

तिलक हिन्दी पुस्तकालय, जयपुर के पुस्तकाध्यक्ष से अपने बिल नंबर १५३५ ता० २५-४-३५ के हिसाब में १३५॥=)। (एक सौ पैंतीस रुपये, दस आने, तीन पाई) चेक-संख्या-ए. १८९०८ द्वारा* धन्यवाद-पूर्वक प्राप्त हुए।

धर्मचन्द्र विशारद
संचालक
हिंदी भवन, लाहौर

लाहौर
१५-५-३५

---

*यदि रुपये चेक द्वारा प्राप्त हों तो इसका उल्लेख अवश्य करना चाहिये क्योंकि चेक कभी भी गुम हो सकता है या चेक देने वाला चेक की अदायगी रोक सकता है।

अभ्यास

१—एक पत्र एक कपड़े की दुकान वाले को लिखो कि जो कपड़ा उसने भेजा है वह नमूने के साथ नहीं मिलता।

२—पोस्टमास्टर को एक पत्र लिखो कि जो वी० पी० पार्सल मेरे नाम आया है, उसे एक सप्ताह तक पास रक्खें, मैं छुड़ा लूँगा।

३—किसी स्टेशन-मास्टर को पत्र लिखो कि मेरा अमुक सामान रेल में रह गया है।

५—किसी समाचार-पत्र को किसी शोकसमाचार छापने को पत्र भेजो।

७—समाचार-पत्र के संचालक को अमुक तारीख के पत्र न मिलने की शिकायत लिखो।

९—समाचार-पत्र में एक नोटिस भेजो कि हमने अमुक मनुष्य से व्यापारिक सम्बन्ध तोड़ दिया है।

१०—भाई के विवाह पर जाने के लिए स्कूल से छुट्टी का प्रार्थना-पत्र लिखो।

११—हैडमास्टर को लायब्रेरी का जुर्माना माफ करने के लिए प्रार्थना-पत्र लिखो।

१२—स्कूल के संचालक को वेतन-वृद्धि के लिए प्रार्थना-पत्र लिखो।

१३—म्युनिसिपल कमेटी के मंत्री को शिकायत करो कि तुम्हारे कूचे में रोशनी का अच्छा प्रबंध नहीं है।

१४—सिटी मैजिस्ट्रेट का ध्यान इस ओर आकर्षित करो कि तुम्हारे बाज़ार में हिन्दू मुस्लिम दंगा होने का डर है, अतः उसका प्रबंध करें।

१५—अपने पुत्र के मुण्डन-संस्कार का निमन्त्रण भेजो।

१६—स्कूल की खेलों के दिन का निमन्त्रण भेजो।

१७—पूज्यपाद मालवीय जी के अपने स्कूल में पधारने के अवसर पर स्कूल की ओर से दिया जाने वाला अभिनन्दन-पत्र तैयार करो।